



## हिन्दी भाषा में सार्वजनिक भाषण एवं नेतृत्व

### Dr. Sonia Rani

Assistant Professor Psychology  
Shaheed Udham Singh Post Graduate Government College,  
Matakrajari, Indri Karnal (Haryana)  
kamrasonia83@gmail.com

#### Keywords

#### ABSTRACT

मेरी ओर से .....

पब्लिक स्पीकिंग आज के समय में एक महत्वपूर्ण कौशल है जो हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक है। यह पुस्तक आपको पब्लिक स्पीकिंग के महत्वपूर्ण मुद्दे जैसे - भाषण कला, भाषण की तैयारी, अभिव्यक्ति कौशल, नेतृत्व, व्यक्तित्व विकास, आत्म विश्वास का विकास, मंच कौशल आदि के बारे में आपकी स्पीकिंग को दूसरों के समक्ष प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने का एक प्रयास मात्र है। यह पुस्तक आपके व्यक्तित्व को आत्म विश्वास से भरने में आपको प्रेरित करेगी और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की ओर ले जाने में सहायता करेगी। इस पुस्तक को लिखने में मेरे माता-पिता एवम् मेरे सहकर्मी मेरे प्रेरक रहे हैं जिनके कारण मैंने यह हिम्मत जुटाई और अपनी प्रथम पुस्तक को आपको समक्ष समर्पित कर रही हूँ। यह पुस्तक न केवल नई शिक्षा नीति 2020 में Skill Enhancement Course कोर्स में विद्यार्थियों की सहायता करेगी बल्कि आजीवन पुस्तक की सामग्री सभी के जीवन में मार्गदर्शन साबित होगी।

डा॰ सोनिया रानी, अस्सिस्टेंट

प्रोफेसर मनोविज्ञान

शहीद उद्यम सिंह स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय, मटकमाजरी, इन्द्री

करनाल (हरियाणा)

(विषय-सूची)

**इकाई-1**

1. भाषण कला: अर्थ
2. भाषण कला का विकास एवं उपयोगिता
3. सफल वक्ता के गुण
4. विषय चयन

**इकाई-2**

5. अच्छा भाषण कैसे लिखें
6. भाषण का आरंभ मध्य व अन्त में रोचकता
7. एक यादगार भाषण
8. अच्छा भाषण लिखने के टिप्स
9. भाषण शैली का विकास
10. सफल भाषण की कसौटियाँ
11. मंच निर्भीकता

**इकाई-3**

12. सार्वजनिक अभिव्यक्ति एवं मूल्यांकन
13. नेतृत्व
14. युवा कार्यकर्ताओं की भाषण कला
15. शिक्षा के महत्त्व पर सार्वजनिक बोलना व शिक्षा का महत्त्व
16. मंच पर सार्वजनिक बोलना के कौशल ग्रहण
17. सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना

**इकाई-4**

18. हिन्दी भाषा की प्रासांगिकता
19. सार्वजनिक बोलने की कला
20. नेतृत्व परिपेक्ष्य व बच्चों में नेतृत्व विकास
21. व्यक्तित्व विकास व नेतृत्व
22. शिक्षा में नेतृत्व विकास

## (संदेश)

ईश्वर ने सभी प्रजातियों में से केवल मानव को ही वाणी कौशल प्रदान किया है। हमें अपनी बोलने की कला को ऐसा बनाना चाहिए कि अन्य लोग हमें सुनने की माँग करें व हमारे बोलने का हमेशा इंतजार करें। यह पुस्तक इसी उद्देश्य का ही एक प्रयास मात्र है।

## (लेखक-परिचय)

### डॉ० सोनिया रानी

हरियाणा के करनाल जिले के एक छोटे सा कस्बा तरावड़ी में डॉ० सोनिया रानी का जन्म हुआ। परिवार का वातावरण ज्यादा शैक्षिक न होने के कारण भी माता-पिता ने डॉ० सोनिया को हमेशा आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। डॉ० सोनिया की स्कूली शिक्षा तरावड़ी में ही हुई। उच्च शिक्षा राजकीय महिला महाविद्यालय करनाल से 2002 में उत्तीर्ण की! एम०ए०, एम०फिल्०, पीएच०डी० मनोविज्ञान कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से की वर्तमान में डॉ० सोनिया रानी सहायक प्राध्यापिका शहीद उधम सिंह स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय मटकमाजरी इन्द्री करनाल में कार्यरत हैं। डॉ० सोनिया के पास लगभग 18 वर्षों का शैक्षणिक अनुभव है। आपके कई शोध-पत्र विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपके द्वारा कई राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों/कार्यशालाओं में भाग लिया जा चुका है और प्रस्तुतियाँ भी दी गई हैं। डॉ० सोनिया रानी के द्वारा शिक्षण के अलावा एक मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदात्री का कार्य भी किया जाता है।

## इकाई-1

1. भाषण कला: अर्थ
2. भाषण कला का विकास एवं उपयोगिता
3. सफल वक्ता के गुण
4. विषय चयन

### 1. भाषण कला

#### भाषण कला का अर्थ

हाथों को नचाकर, मुख मुद्राएँ बनाकर ऊँचे आवाज़ में अपनी बात कहना भाषण कला नहीं है। भाषण देने की कला अपने विचारों को कलात्मक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। भाषण कला अपने भावों को आत्मविश्वास के साथ नपे तुले शब्दों में कहने की दक्षता है। भाषण कला व्यक्ति को सामाजिक, राजनीतिक और व्यावसायिक संदेश को आदर्श रूप से दूसरों के साथ सांझा करने में मदद करती है। भाषणकला भाषण देने वाले के व्यक्तित्व और संवेदनशीलता को भी प्रकट करती है।

भाषण के साथ शारीरिक भाषा, वाणी की संवेदनशीलता, शब्दार्थ, उच्चारण और विचारों की संरचना की क्षमता आदि इन सभी पहलुओं को मिलाकर एक उत्कृष्ट भाषण प्रदान किया जा सकता है जो सुनने वाले को प्रभावित करता है और संदेश को समझाने में मदद करता है।

भाषण कला से संबंधित कई महत्वपूर्ण तत्व हो सकते हैं, जैसे कि भावनात्मक संवेदनशीलता, आवाज का उपयोग, संभाषण की क्षमता, लोगों को समझने की क्षमता और सामग्री का चयन, संभाषण में संभावित का उत्तर देना, सुनने वालों के प्रति सहानुभूति, सामान्य संभाषण के साथ-साथ विशेष संभाषण जैसे कि उपनिवेशात्मक संभाषण और प्रेरणादायक भाषण आदि इन सभी पहलुओं का ध्यान रखना एक पूर्णतः विकसित और प्रभावी संभाषक बनने में मदद कर सकता है।

### 2. भाषण कला का विकास

भाषण एक कला है जो व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण अंग है। जिस व्यक्ति की जिह्वा में कोई दोष नहीं है वह अपने घर-परिवार, दोस्तों के साथ बातचीत कर सकता है वह निम्न तरीकों को अपना करके भाषण कला में पारंगत हो सकता है:-

- (i) अभ्यास :भाषण कला का विकास करने के लिए निरंतर अभ्यास बहुत महत्वपूर्ण है। नियमित रूप से भाषण करके सामाजिक अवसरों का उपयोग करके इसमें विशेषज्ञता प्राप्त की जा सकती है।
- (ii) स्व-अध्ययन: स्व-अध्ययन के माध्यम से उपयुक्त पुस्तकों, लेखों और वीडियो के माध्यम से भाषण कला की विविध दिशाओं का अध्ययन किया जा सकता है।
- (iii) प्रशिक्षण :व्यक्तिगत या सार्वजनिक भाषण कक्षाओं, संवाद गतिविधियों और कोर्सों में शामिल होकर भाषण कला को विकसित किया जा सकता है।
- (iv) संवाद कौशल का विकास: संवाद कौशल को बढ़ाने के लिए सक्रिय रूप से सुनना, प्रश्न पूछना और विचारों के संदर्भ में व्यक्त करना महत्वपूर्ण है।
- (v) स्व-विश्लेषण :अपने पिछले भाषणों का विश्लेषण करना और उनमें सुधार करना भी भाषण कला

का विकास करने में मदद कर सकता है।

भाषण कला से सामाजिक प्रदर्शन, सार्थक संवादों में भाग लेना, लोगों के साथ अनुभव साझा करना, स्वयं को नए और विभिन्न मंचों पर प्रस्तुत करना, नए विषयों का अध्ययन करना, अच्छी भाषा प्रयोग करना अभ्यास के माध्यम से अपनी आवाज और भावनाओं को सुधारने में ध्यान देना, विभिन्न भाषणों को सुनना और उनसे सीखना, अच्छे भाषणों का अध्ययन करना और संभाषण में उपयुक्त व व्यक्तिगत शैली विकसित करना भी महत्वपूर्ण हो सकता है। इन सभी तरीकों से भाषण कला का विकास किया जा सकता है।

### भाषण कला की उपयोगिता

भाषण कला की उपयोगिता विभिन्न क्षेत्रों में होती है:-

- (i) राजनीति में : भाषण कला राजनीतिक नेताओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से वे अपनी नीतियों और उद्देश्यों को लोगों के सामने प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं।
- (ii) व्यापार में : उद्योग और व्यापार में भाषण कला का सही उपयोग करके व्यावसायिक संचार को सुधारा जा सकता है, जैसे कि प्रेजेंटेशन, संवाद, कार्यशालाओं, सम्मेलनों और सार्वजनिक भाषणों के माध्यम से।
- (iii) शिक्षा में शिक्षा क्षेत्र में भाषण कला विद्यार्थियों को बेहतर रूप से सीखने में मदद कर सकती है ;, जैसे कि विषय के बारे में भाषण देना, प्रेजेंटेशन, और विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए उनकी भावनाओं को समझना।
- (iv) सामाजिक प्रभाव: भाषण कला का उपयोग लोगों को संबोधित करने और उन्हें आत्मनिर्भरता, सामर्थ्य और प्रेरणा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।
- (v) प्रदर्शन व मीडिया: मीडिया प्रसारित खबरों व मुद्दों को समझाने समझने के लिए भाषण कला का उपयोग करता है।
- (vi) मोटिवेशनल स्पीकिंग: मोटिवेशन स्पीकर व टेनर भी श्रोताओं को प्रेरित करने के लिए भाषण कला का उपयोग करते हैं।
- (vii) न्यायिक कार्यालय: वकील व न्यायिक अधिकारी भी अपने विवादों को प्रस्तुत करने व समर्थन देने के लिए भाषण कला का ही उपयोग करते हैं।

भाषण कला व्यक्तित्व विकास में भी भूमिका निभाती है। यह व्यक्ति को आत्मविश्वास और स्वाभिमान देती है, साथ ही उसके सामाजिक और पेशेवर जीवन में सफलता की दिशा में मदद करती है। इसके अलावा, भाषण कला व्यक्ति को विचारशीलता और समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करती है। भाषण कला व्यक्ति को साहस और सामर्थ्य प्रदान करती है कि वह अपने विचारों को सामने लाए और अपने दृष्टिकोण को समझाएं। यह सामाजिक संबंधों को मजबूत करती है और व्यक्ति को अधिक समर्थ बनाती है कि वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रयास करें।

भाषण कला लोगों के संचार को मजबूत करने, विचारों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने और समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

### 3. सफल वक्ता

#### सफल वक्ता के मुख्य गुण

- (i) सरलता व स्पष्टता : सफल वक्ता में अपने विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। सफल वक्ता की आवाज ऊँची होनी चाहिए ताकि सभी उसे सुन सकें।
- (ii) संवेदनशीलता: सफल वक्ता श्रोताओं की भावनाओं को समझता है और उनके साथ संवाद करने का समय निकालता है।

- (iii) विनीतता: सफल व्यक्ति विनीत होते हैं और अपने ज्ञान या अनुभव की बजाय अपने श्रोताओं के ध्यान को महत्वपूर्ण मानते हैं
- (iv) संवाद कौशल: सफल वक्ता अच्छे संवाद कौशल रखते हैं और अपने संवाद द्वारा अपने विचारों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।
- (v) समर्थन: अच्छा वक्ता अपने विचारों को जारी रखने के लिए समर्थन और प्रेरणा प्रदान करने में माहिर होते हैं।
- (vi) शिक्षाप्रद: सफल वक्ता अपने श्रोताओं को नए और महत्वपूर्ण ज्ञान से परिचित कराते हैं।
- (vii) आत्मविश्वास: सफल वक्ता आत्मविश्वासी होते हैं और अपने विचारों को श्रोताओं के सामने विस्तृत रूप से प्रस्तुत करते हैं।
- (viii) समय प्रबंधन: सफल वक्ता समय का महत्व समझते हैं और अपने भाषण को निश्चित समयावधि में पूरा करने के लिए कुशलता से काम करते हैं।
- (ix) साहसिकता: कुशल वक्ता नए और अज्ञात क्षेत्रों में प्रवेश के लिए साहसी होते हैं और नए विचारों का समर्थन करते हैं।
- (x) संगठनात्मक क्षमता: सफल वक्ता अपने भाषण को संगठित और यथार्थ साधने के लिए संगठित क्षमता रखते हैं।
- (xi) प्रतिस्पर्धा भाव: सफल वक्ता अपने श्रोताओं के ध्यान केन्द्र में रहने के लिए अपने भाषण को और भी प्रभावशाली बनाने के लिए प्रतिस्पर्धात्मक भाव रखते हैं।
- (xii) संवादात्मकता: कुशल वक्ता अपने श्रोताओं के साथ संवाद करने के लिए तत्पर रहते हैं और उनके सवालों और विचारों को महत्व देते हैं।

एक सफल वक्ता अपने विचारों को विवेचनशीलता और समर्थन के साथ प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके श्रोतागण उत्तेजित और प्रेरित महसूस करते हैं। सफल वक्ता ऐसे अनोखे संदेश व विचार देते हैं जो अद्वितीय हो जिसे श्रोतागणों ने पहले कभी न सुना हो।

#### 4. विषय चयन

##### विषय चयन में सावधानियाँ

एक अच्छे भाषण की विषय-सामग्री क्या होगी? विषय का चयन करते समय कुछ सावधानियों को ध्यान में रखना जरूरी है, जो निम्नलिखित हैं-

- (i) अध्ययन और विश्लेषण :विषय को अच्छी तरह से अध्ययन और विश्लेषण करें, ताकि आप उसकी सम्पूर्णता को समझ सकें।
- (ii) अपने रुझान और रुचियों को ध्यान में रखें: अपने रुझानों, रुचियों और विशेषज्ञता क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए एक विषय का चयन करना चाहिए।
- (iii) आधारितता: विषय का चयन करते समय साक्षात्कार, प्रमाण-पत्र और सत्यापन से संबंधित आधारितता का महत्वपूर्ण ध्यान देना चाहिए।
- (iv) लक्ष्य और लक्षित श्रोता का ध्यान रखें: अपने भाषण के लक्ष्य और लक्षित श्रोता को ध्यान में रखते हुए ही विषय का चयन करना चाहिए।
- (v) संभावित प्रभाव का विचार: विषय के चयन के संदर्भ में संभावित प्रभावों का विचार करें, जैसे कि उत्तेजना, शिक्षा और प्रेरणा।

विषय चयन से आप अपने श्रोताओं की उम्र, शैक्षिक स्तर और सामाजिक संदर्भ के साथ-साथ आप अपने व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को भी ध्यान में रखें। यह आपको उनके साथ संबंधित और प्रेरणादायक विषयों का चयन करने में मदद करेगा। यदि आप अपनी क्षमताओं, रुचियों और लक्ष्यों के अनुसार विषय का चयन करते हैं, तो आपका भाषण प्रभावशाली और संवेदनशील होगा। विषय चयन से विषय की प्राथमिकता,

उपलब्ध संदर्भ, संसाधन और विषय के प्रस्तुतीकरण की संभावना इन सभी पारम्परिक और अत्याधुनिक स्रोतों को ध्यान में रखते हुए अच्छे से सोच-समझ कर विषय का चयन करें। विषय चयन से आप अपने श्रोताओं के साथ संवाद में रहें। उनसे उनकी रुचियों और आशाओं के बारे में जाने और उन्हें भाषण के विषय पर राय देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे आप उनके रुचि और जरूरतों के आधार पर एक सामर्थ्यपूर्ण विषय चुन सकते हैं और अपने भाषण को अधिक आकर्षक बना सकते हैं।

## इकाई-2

5. अच्छा भाषण कैसे लिखें
6. भाषण का आरंभ मध्य व अन्त में रोचकता
7. एक यादगार भाषण
8. अच्छा भाषण लिखने के टिप्स
9. भाषण शैली का विकास
10. सफल भाषण की कसौटियाँ
11. मंच निर्भीकता

## 5. भाषण की संरचना

### एक अच्छे भाषण को लिखें?

आप जानते हैं कि आप कौन सा संदेश प्रसारित करना चाहते हैं, आप इसे किसे दे रहे हैं और यहां तक कि आप इसे कैसे कहना चाहते हैं। लेकिन आपको यह जानना होगा कि भाषण लिखने से पहले उसे कैसे शुरू करें, विकसित करें और बंद करें।

किसी भाषण को निबंध की तरह समझें। इसमें एक परिचय, निष्कर्ष और बीच में मुख्य भाग होना चाहिए। यह विचारों को तार्किक क्रम में रखता है ताकि दर्शक उन्हें बेहतर ढंग से समझें और उनका अनुसरण कर सकें। एक रुपरेखा के साथ भाषण देना सीखने से आपकी कहानी को, अपनी बात कहने के लिए आवश्यक आधार मिलता है।

#### (क) एक सम्मोहक भाषण का आरंभ कैसे लिखें

कुछ शोध से पता चलता है कि व्यस्त दर्शक एक समय में केवल 15 से 20 मिनट तक ही ध्यान देते हैं। अन्य अनुमान और भी कम हैं, यदि आप अपने भाषण की शुरुआत में पहली बार अच्छा प्रभाव डालते हैं, तो आपके पास अपने दर्शकों को बीच में दिलचस्प बनाने का एक बेहतर मौका होता है जब दर्शकों का ध्यान कम हो जाता है। इंट्रो माँडल को लागू करने से आपको बोलना शुरू करते ही अपने दर्शकों का ध्यान खींचने और बनाए रखने में मदद मिल सकती है। भाषण का आरम्भिक भाग संक्षिप्त नाम, रुचि, आवश्यकता, समय,

रोडमैप और उद्देश के लिए है, और यह उन प्रमुख बिंदुओं का प्रतिनिधित्व करता है जिन पर आपको शुरूआत में ध्यान देना चाहिए।

- (i) **रुचि:** अपना या अपने विषय का संक्षिप्त परिचय दें और आत्मविश्वास के साथ बोलें। एक प्रासांगिक डेटा या एक किस्से का उपयोग करके एक आकर्षक प्रारंभिक वक्तव्य लिखें जिससे दर्शक संबंधित हो सकें।
- (ii) **आवश्यकताएँ:** दर्शक आपकी बात सुन रहे हैं क्योंकि उनके पास सीखने के लिए कुछ है। यदि आप निवेशकों के पैनल के सामने एक नए रूप का विचार पेश कर रहे हैं, तो वे संभावित भागीदार आपके उत्पाद के बारे में और जानना चाहते हैं कि वे इससे क्या-क्या कर सकते हैं।
- (iii) **समय:** जब उचित हों, अपने श्रोताओं को बताएं कि आप कितनी देर तक बोलेंगे। इससे श्रोता अपेक्षाएं निर्धारित कर सकते हैं और अपने ध्यान की अवधि पर नज़र रख सकते हैं यदि कोई थका हुआ श्रोता जानता है कि आप 40 मिनट तक बात करेंगे, तो वह समय बीतने के साथ-साथ अपनी ऊर्जा का बेहतर प्रबंधन करेंगे।
- (iv) **रुटमैप:** उन तीन मुख्य बिंदुओं का संक्षिप्त विवरण दें जिन्हें आप अपने भाषण में शामिल करेंगे। यदि किसी श्रोता सदस्य का ध्यान भटकना शुरू हो जाता है और वे कुछ वाक्य भूल जाते हैं, यदि वे प्रस्तुति की सामान्य रूपरेखा जानते हैं तो वे अधिक आसानी से अपना प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं।
- (v) **उद्देश्य:** दर्शकों को बताएं कि आप क्या हासिल करने की उम्मीद करते हैं जो उन्हें अंत तक सुनने के लिए प्रोत्साहित करें।

#### (ख) भाषण के मध्य में लिखना

आपके भाषण का मुख्य भाग सबसे अधिक सूचना-सघन अनुभाग है। तथ्य, दृश्य सामग्री, पावरप्वॉइंट ये सारी जानकारी दर्शकों का ध्यान लगाने में सहायता मिलती है। भाषण संरचना पर टिके रहने से आपके संदेश पर ध्यान केंद्रित होता है और आप टैक से भटकने से बचते हैं, जिससे आप जो कुछ भी कहते हैं वह यथासंभव उपयोगी हो जाता है। अपने भाषण के मध्य को तीन बिंदुओं तक सीमित रखें और तीन से अधिक स्पष्टीकरण के साथ उनका समर्थन न करें। इस माडल का अनुसरण करने से आपके विचार व्यवस्थित होते हैं और आपको दर्शकों द्वारा रखी जा सकने वाली जानकारी से अधिक जानकारी प्रदान करने से रोकता है।

अपनी प्रस्तुति को इंटरैक्टिव बनाने के लिए भाषण के इस अनुभाग का प्रयोग करने से रुचि बढ़ सकती है और आपके दर्शक जुड़ सकते हैं। एकरसता को तोड़ने के लिए एक वीडियो या प्रदर्शन शामिल करने का प्रयास करें। एक त्वरित, सर्वेक्षण या सर्वेक्षण भी दर्शकों को उत्साहित रखता है।

#### (ग) भाषण समाप्त करें

आपको अंत में अपनी बात दोहराना और नीरस लग सकता है। अपने अनगिनत बार इसका अभ्यास किया है यह सब पहले भी सुना है, लेकिन दोहराव याददाशत और सीखने में सहायता करता है, जिससे आपके दर्शकों को वही याद रखने में मदद मिलती है जो आपने उन्हें बताया है। कुछ छोटे वाक्य के साथ मुख्य बिंदुओं को सारांशित करने के लिए अपने भाषण में निष्कर्ष का उपयोग करें।

एक यादगार नोट पर समाप्त करने का प्रयास करें, जैसे एक प्रेरक उद्धरण या एक विचारशील प्रश्न प्रस्तुत करना जिस पर दर्शक जाने के बाद विचार कर सकें। प्रस्ताव या पिच-शैली के भाषणों में, काल टू एकशन पर उतरने पर विचार करें जो आपके दर्शकों को अगला कदम उठाने के लिए आमंत्रित करता है।

## 6. भाषण में रोचकता

### भाषण आरंभ, मध्य और अंत में रोचकता कैसे?

भाषण की संगठनात्मक संरचना भाषणदर भाषण अलग-अलग होती है। किसी भी भाषण के पाँच मुख्य भाग होते हैं – ध्यान, कथन, परिचय, मुख्य भाग, निष्कर्ष व अवशिष्ट संदेश।

#### (i) आरंभ/शुरूआत:

- आरंभ में किसी प्रासांगिक कहानी, प्रश्न, चौंकाने वाले आंकड़ों का इस्तेमाल करें जो दर्शकों का ध्यान खींच सकें।
- विषय का परिचय: अपने भाषण के विषय को स्पष्ट और संक्षेप में परिचय करें।
- थीसिस कथन: अपने सिद्धान्त संकेत को स्पष्ट और संक्षिप्त तरीके से प्रस्तुत करें ताकि दर्शकों को पता चले कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।

#### (ii) मध्य भाग

- तार्किक प्रगति: हर तर्क को व्यवस्थित और तार्किक रूप में प्रस्तुत करें, जिससे दर्शक आसानी से अनुसरण कर सकें।
- कहानियाँ और उदाहरण: अपने तर्क को समझाने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरण, उपाख्यान या कहानियों का इस्तेमाल करें जो दर्शकों को जोड़ सकें।
- दर्शकों का जुड़ाव: दर्शकों से सवाल पूछकर या उनकी राय लेकर उन्हें शामिल करें। इससे उनका ध्यान बना रहेगा।

भाषण के मध्य में कुछ इंटरैक्टिव तत्व शामिल करें, जैसे कि लघु प्रश्नोत्तरी, दिमाग पर जोर डालने वाला सत्र, या सामूहिक चर्चा। इससे दर्शकों का ध्यान बना रहेगा और इन्हें भाषण में शामिल होने का मौका मिलेगा।

#### (iii) अंत

- संक्षिप्त: भाषण के अंत में, अपने सिद्धान्तों व तर्कों को संक्षिप्त में आवृत्ति करें।

- **प्रेरणादायक संदेश:** एक प्रेरणा संदेश या उद्धारण के साथ भाषण को समाप्त करें जो दर्शकों को याद रहें ।
- **कार्यवाही के लिए बुलावा:** दर्शकों को कार्यवाही करने के लिए प्रेरित करें, जैसे कि किसी विशेष कार्य को शुरू करने या किसी समस्या का समाधान करने की दिशा में ।

### निष्कर्ष:

रोचकता को बनाए रखने के लिए, यह ध्यान रहें कि आपका भाषण मनोहर हो, अलग-अलग तरीके से प्रस्तुत किया गया हो और दर्शकों के साथ एक संबंध बनाए ।

भाषण के हर एक हिस्से में तरह-तरह की भाषा का उपयोग करें। अलग-अलग शब्दों, वाक्यांशों और मुहावरों का इस्तेमाल करके भाषण को जीवंत बनाए । इससे सुनने वाले का ध्यान बना रहेगा और उन्हें खेद महसूस नहीं होगा ।

भाषण का अन्त अपने आप में प्रभावशाली और यादगार हो । आप अपने भाषण को एक शक्तिशाली उद्धारण, श्लोक या कहानी के साथ समाप्त कर सकते हैं जो दर्शकों के दिल में गहरा प्रभाव छोड़ सके। इसके अलावा, आप अंत में धन्यवाद व्यक्त करें दर्शकों के समर्थन और समय के लिए और उन्हें प्रेरित करें भविष्य में भी आगे बढ़ने के लिए ।

भाषण के अन्त में एक छोटी सी अनुभव की कहानी या व्यक्तिगत अंतदृष्टि सांझा करें जो आपके विचारों को और समझदार बना सके । इससे दर्शकों का ध्यान और दिलचस्पी बनी रहेगी, और उन्हें आपके भाषण को याद करने में मदद मिलेगी।

भाषण के अंत में एक संवेदनशील निवेदन करें, जैसे कि किसी सामाजिक मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करना या किसी सेवा का प्रस्ताव करना । इससे दर्शकों को इसके महत्व का अहसास होगा और वे अपने क्षेत्र में सामाजिक सुधार में योगदान देने की प्रेरणा महसूस करेंगे ।

अंत में अपने भाषण का संक्षिप्त सार देना न भूलें । एक छोटे से सारांश के माध्यम से अपने प्रमुख संदेश को दोहराएं और दर्शकों को अपने विचार और उद्देश्य से जुड़े रहने का प्रोत्साहन दें । इससे आपका भाषण पूरा होगा और दर्शकों को एक सुंदर और यादगार अनुभव मिलेगा।

भाषण के अंत में अपने शब्दों को सशक्त और प्रभावशाली बनाए। अपने भाषण में जुनून और दृढ़ विश्वास को दिखाएं जो दर्शकों को प्रेरित करें कि वे भी अपने सपनों को पूरा करने के लिए तत्पर रहें । इससे आपका भाषण यादगार बनेगा और लोगों पर अधिक प्रभाव छोड़ेगा ।

भाषण के अंत में समय नियमित रखें और अपने शब्दों को सम्मिलित रखें । भाषण का अवसर अच्छा होता है, लेकिन लंबा भाषण सुनने का आदत नहीं होती है । इसलिए, अंत में भाषण को सरल और संक्षिप्त रखें ताकि दर्शकों को आपका संदेश आसानी से समझ आए और वे प्रेरित हो सकें ।

भाषण के अंत में प्रशंसा और आर्शीवाद देना न भूलें। आप अपने श्रोताओं को धन्यवाद व्यक्त करें और उन्हें आर्शीवाद देकर आगे बढ़ने की शुभकामनाएँ दें। इससे दर्शकों को आपकी सम्भावना का अहसास होगा और वे अपने मन को प्रसन्न और प्रेरित महसूस करेंगे।

भाषण के अंत में एक छोटा सा प्रयास करें जो दर्शकों को याद रहे। आप कुछ विश्वासपूर्ण शब्दों या प्रतिकोण का उपयोग करके अपने भाषण को यादगार बनाएँ। इससे आपका संदेश और आपका व्यक्तित्व दर्शकों के मन में गहरा असर छोड़ सकेगा।

## 7. एक यादगार भाषण

### भाषण ऐसा हो जो दर्शकों को याद रहे

अच्छा भाषण लेखन शब्दों और विचारों को एक सम्मोहक, सुसंगत और यादगार संदेश में ढालने की कला है जो दर्शकों को पसंद आता है यहाँ महान भाषण लेखन के कुछ मुख्य तत्व दिए गए हैं-

- इसकी शुरुआत भाषण के उद्देश्य और इसमें शामिल होने वाले श्रोताओं को स्पष्ट रूप से समझाने की होती है।
  - एक अच्छी तरह से लिखा गया भाषण स्पष्ट रूप से अपना केंद्रीय संदेश देता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि श्रोता मुख्य बिंदुओं को समझते हैं और उन्हें याद रखते हैं।
  - एक मनोरम शुरुआत, एक सुव्यवस्थित निकाय और एक निष्कर्ष के साथ विचारपूर्वक संरचित किया गया है जो मुख्य संदेश को पुष्ट करता है।
  - अच्छा भाषण लेखन बौद्धिक और भावनात्मक दोनों स्तरों पर दर्शकों से जुड़ने के लिए आकर्षक सामग्री, कहानियों, उदाहरणों और संबंधित उपाख्यानों को बुनने की शक्ति को अपनाता है। अंततः वक्ता की प्रमाणिकता और प्रस्तुति के साथ-साथ इन तत्वों का संयोजन ही है, जो किसी पृष्ठ पर शब्दों को एक शक्तिशाली और प्रभावशाली मौखिक कथा में बदल देता है।
- (क) एक अच्छे भाषण के आधारभूत तत्व: एक महान भाषण में कई प्रमुख गुण शामिल होते हैं, लेकिन तीन मूलभूत तत्व किसी भाषण को वास्तव में प्रभावी बनाते हैं -
- (i) स्पष्टता और उद्देश्य: सबसे पहले स्पष्टता और उद्देश्य महत्वपूर्ण है। वक्ता को स्पष्ट होना चाहिए और पूरे समय अपने संदेश पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए। दर्शकों को बिना किसी स्पष्टता के भाषण के उद्देश्य और निष्कर्ष को आसानी से समझना चाहिये।
- (ii) दर्शकों के साथ जुड़ाव: दूसरा, भाषण को दर्शकों के साथ जोड़ना चाहिए। उनकी रुचि बनाए रखने के लिए कहानी सुनाने और अन्य तकनीकों का उपयोग करना सहायक होता है, और वक्ता को उनकी भावनाओं और जरूरतों के बारे में बात करनी चाहिए। जब श्रोता भाषण से जुड़ाव महसूस करते हैं तो वह यादगार और प्रभावशाली बन जाता है।

- (iii) **एकजुट संरचना:** अंत में एक सुव्यवस्थित संरचना आवश्यक है। एक अच्छा परिचय दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। फिर, निकाय को मुख्य बिंदुओं और साक्ष्यों को तार्किक रूप से प्रस्तुत करना चाहिए और उनका पालन करना आसान होना चाहिए और निष्कर्ष में मुख्य बिंदुओं का सारांश देना चाहिए। केंद्रीय संदेश को सुदृढ़ करना चाहिए जबकि अन्य महत्वपूर्ण कारक एक भाषण को घरेलू बनाते हैं, ये तीन तत्व प्रभावी भाषण लिखने के लिए आवश्यक हैं।
- (ख) **एक अच्छे भाषण के मुख्य तत्व**
- (i) **परिचय:** परिचय आपके भाषण के लिए मंच तैयार करता है और दर्शकों का ध्यान खींचता है। इसमें एक ध्यान आकर्षित करने वाला उद्घाटन शामिल होना चाहिए, विषय का परिचय देना चाहिए और क्या कवर किया जाएगा इसका एक सिंहावलोकन प्रदान करना चाहिए।
- (ii) **आरंभिक मनमोहक वक्तव्य:** यह एक मजबूत वक्तव्य है जो दर्शकों को तुरंत आकर्षित करता है और भाषण विषय के बारे में जिज्ञासा पैदा करता है।
- (iii) **थीसिस कथन/केंद्रीय विचार:** थीसिस कथन एक संक्षिप्त कथन है जो आपके भाषण के मुख्य बिंदु या तर्क का सारांश प्रस्तुत करता है। यह दर्शकों के लिए यह समझने के लिए एक रोडमैप के रूप में कार्य करता है कि भाषण किस बारे में है।
- (iv) **मुख्य भाग:** भाषण का मुख्य भाग वह है जहाँ आप अपने मुख्य बिंदुओं या तर्कों को विस्तार से बताते हैं। प्रत्येक बिन्दु आमतौर पर साक्ष्य, उदाहरण, आँकड़े या उपाख्यानों द्वारा समर्थित होता है। मुख्य बिंदुओं के बीच सहज बदलाव के साथ आंकड़ों को तार्किक और सुसंगत रूप से व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
- (v) **सहायक साक्ष्य:** इसमें तथ्य, डेटा, शोध निष्कर्ष, विशेषज्ञ राय या व्यक्तिगत कहानियाँ शामिल हैं जो आपके मुख्य बिंदुओं को समर्थन और मजबूती प्रदान करती हैं। अच्छी तरह से चुने गए और विश्वसनीय साक्ष्य आपके भाषण की प्रेरक शक्ति को बढ़ाते हैं।
- (vi) **ट्रांजिशन:** ट्रांजिशन वे वाक्यांश या कथन हैं जो आपके भाषण के विभिन्न हिस्सों को जोड़ते हैं, दर्शकों का एक विचार से दूसरे विचार तक मार्गदर्शन करते हैं। प्रभावी बदलाव विषयों या विचारों में बदलाव का संकेत देते हैं और पूरे भाषण में सहज प्रवाह बनाए रखने में मदद करते हैं।
- (viii) **प्रतिवाद और खंडन:** यदि आपके भाषण में विरोधी दृष्टिकोण या प्रतितर्क को संबोधित करना शामिल है, तो आपको इन्हें स्वीकार करना चाहिए और उसे संबोधित करना चाहिए। प्रतितर्क प्रस्तुत करने से आपका भाषण अधिक प्रेरक बनता है।

- (viii) **निष्कर्ष:** निष्कर्ष आपके भाषण का अंतिम भाग है और इसे आपके संदेश को संतोषजनक अंत तक ले जाना चाहिए। अपने मुख्य बिंदुओं को सारांशित करें, अपने थीसिस कथन को दोबारा दोहराएं, और दर्शकों को एक यादगार समापन विचार या कार्यवाही के लिए छोड़ दें।
- (ix) **समापन वक्तव्य:** यह अंतिम वक्तव्य है जो एक स्थायी प्रभाव छोड़ता है और आपके भाषण के मुख्य संदेश को पुष्ट करता है। यह प्रश्न कार्यवाही का आह्वान, एक विचारोत्तेजक प्रश्न, एक शक्तिशाली उद्धरण या एक यादगार किस्सा हो सकता है।
- (x) **विवरण और प्रस्तुति:** आप अपना भाषण कैसे देते हैं यह भी विचार करने के लिए एक आवश्यक तत्व है, अपने स्वर, शारीरिक भाषा, आँखों का संपर्क, आवाज़ का उतार-चढ़ाव और समय पर ध्यान दें। अपने भाषण का अभ्यास करें और आत्मविश्वासपूर्ण व प्रभावी प्रस्तुति सुनिश्चित करें।

## 8. अच्छा भाषण लिखने के टिप्स

अच्छा भाषण लिखने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए:-

- (i) अच्छा भाषण लिखने के लिए पहले अपने दर्शकों को समझें और उनकी रुचियाँ, चिंता और अपेक्षाएँ ध्यान में रखें।
- (ii) एक सम्मोहक परिचय लिखें जो लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच सके।
- (iii) भाषण के बीच में, अपने प्वाइंटस को तर्क और व्यवस्थित रूप में उपस्थित करें। हर तथ्य को उदाहरण और दर्शकों के साथ समर्थन करें।
- (iv) भाषण के अन्त में, एक पाँवरफुल और प्रेरणादायक निष्कर्ष लिखें जो लोगों को प्रेरित करे और आपके मैसेज को याद रखे।
- (v) अपनी बात को आसान और स्पष्ट भाषा में लिखें, ताकि दर्शकों को आसानी से समझ आ सके।
- (vi) आप अपने भाषण का अभ्यास करें। अभ्यास करने से आप अपने विवरण को बेहतर कर सकते हैं और अपने आत्मविश्वास को भी बढ़ा सकते हैं।
- (vii) अपने भाषण को लिखने और विवरण करने के लिए और समय पर तैयार करने के लिए भी समय निकालें। इससे आप अपने भाषण को और भी आकर्षक बना सकते हैं।
- (viii) आप अपने भाषण में दर्शकों को शामिल करें। उनसे सवाल पूछें, उनकी राय लें और उनके साथ इंटरैक्ट करें। इससे दर्शकों का ध्यान बना रहेगा और वे आपके भाषण को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्राप्त करेंगे।
- (ix) आप अपने भाषण में जुनून और चिंता को दिखाएं। जब आप अपने विचार और सुझाव को दिल से अभिव्यक्त करते हैं, तो दर्शक भी आपकी बात को ज्यादा गंभीरता से लेते हैं। अपनी बात को दिल से बोलने से दर्शकों का आप पर विश्वास भी बढ़ता है।

- (x) अपने भाषण में कहानियों, किस्सों और उदाहरणों का उपयोग करें। यह दर्शकों के ध्यान को बनाए रखने और आपके संदेश को समझाने में मदद करता है। कहानियों और उदाहरणों से आप अपने तथ्य को विवाद और उलझाने के तरीके से समझा सकते हैं।
- (xi) भाषण के दौरान अपने शारीरिक भाषा का भी ध्यान रखें। सकारात्मक शारीरिक भाषा का इस्तेमाल करें, जैसे कि आँखों से संपर्क, मुस्कराहट और संकेत का उपयोग करें। यह आपकी बात को और भी प्रभावशाली बनाता है और दर्शकों के साथ एक और गहरा संबंध बनाता है।
- (xii) भाषण को शुरू और समाप्त करते समय, एक शक्तिशाली कोट्स, श्लोक या किस्से का इस्तेमाल करें जो आपके भाषण के संदेश को सुदृढ़ करें। यह दर्शकों के दिमाग में आपके भाषण को यादगार बनाता है और उन्हें प्रेरित करता है।

## 9. भाषण शैली का विकास

### भाषण शैली का विकास कैसे करें?

भाषण शैली का विकास करने के लिए आप हमेशा अपने दर्शकों का ध्यान रखें। उनको साथ जोड़ने की कोशिश करें और उनकी भावनाओं और उम्मीदों को समझे। अपने भाषण की शैली को उनके स्तर और स्थितियों के अनुरूप बनाए ताकि वे आपके संदेश को समझ सकें और प्रेरणा हासिल कर सकें। भाषण शैली का विकास करने के लिए प्रतिदिन जीवन में भी प्रयोग करें। व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों में शामिल हो कर, सहजता और विश्वास को बढ़ाएँ। इसके अलावा, नए और विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियाँ और भाषण प्रदान करें, जिससे आपकी प्रतिबद्धता और शैली में वृद्धि होती रहे। आप अपनी भाषण शैली को निर्माणात्मक तरीके से विकसित करें। नए और अलग-अलग तरीकों का उपयोग करें, जैसे की कहानियों का उपयोग, व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन, या प्रश्न-प्रतिक्रिया का इन्तजाम जिससे आपकी भाषण शैली में विविधता और मजबूती आएगी, जो दर्शकों को आकर्षित करेगी और इन्हें प्रभावित करेगी। भाषण शैली के विकास के लिए, निम्नलिखित युक्तियाँ ध्यान में रखें:-

- (i) **अध्ययन और प्रयोग:** दूसरों के अच्छे भाषणों को सुनना और पढ़ना एक अच्छी भाषण शैली का ज्ञान प्राप्त करने का एक प्रमुख तरीका है। इसके अलावा, खुद भाषण देना भी एक बढ़िया तरीका है अपनी भाषण शैली को बेहतर बनाने का।
- (ii) **सुधार क्षमता:** अपने भाषण को वीडियो के माध्यम से रिकार्ड करें और फिर उसे पुनः देखें। इससे आपको अपनी भाषण शैली को सुधारने और कमियाँ निकालने में मदद मिलेगी।
- (iii) **समय पर अभ्यास:** रेगुलर अभ्यास और प्रतिबद्धता भाषण शैली को सुधारने का मूल मंत्र है। कुछ समय रोजाना अभ्यास करें और अपनी शैली को नियंत्रित करें।

- (iv) **व्यक्तित्व की पहचान:** अपने व्यक्तित्व को समझकर उसके अनुकूल भाषण शैली का विकास करें जो आपके व्यक्तित्व को सबसे अधिक व्यक्त करे। अपनी शैली को अपनी प्रतिबद्धता और विशिष्टता के अनुरूप बनाएं।
- (v) **फीडबैक का उपयोग:** अपने भाषण को दोस्तों, परिवार के सदस्यों या गुरुओं को सुनाने के बाद उनका फीडबैक लें। उनके सुझावों को ध्यान में रखते हुए अपनी भाषण शैली को सुधारें।
- (vi) **सम्प्रेषण का प्रयोग:** भाषण शैली का विकास करने के लिए, अलग-अलग प्रकार के सम्प्रेषण (संकेत) का भी महत्त्व है। व्यावहारिक और सरल संकेतों का उपयोग करें अपने भाषण को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए।
- (vii) **अवलोकन और अध्ययन:** प्रसिद्ध भाषणकार और सार्वजनिक वक्ता के भाषण को सुनना और देखना भी एक अच्छा तरीका है उनकी शैली और प्रस्ताव से प्रेरित होने का।

### निष्कर्ष

ये सभी युक्तियों का उपयोग करके आप अपनी भाषण शैली को विकसित कर सकते हैं और एक सफल और प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत कर सकते हैं। अपने आप पर विश्वास रखें और अपनी शैली में स्वभाविकता को शामिल करें। अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाने का प्रयास न करें बल्कि अपने आप को समझाएं और स्वाभाविक रूप से स्वयं को व्यक्त करें। जब आप स्वयं से प्यार करते हैं और अपनी विशिष्टता को समझते हैं, तो आपकी भाषण शैली भी अत्यंत प्रभावशाली होती है।

### 10. सफल भाषण की कसौटियाँ

सफल भाषण देना एक कला है और इसमें कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। भाषण में व्यावहारिक और सरल भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए। ताकि सामान्य लोगों के लिए समझने में आसानी हो, इसलिए बहुत ज्यादा निरर्थक और तकनीकी शब्दों का उपयोग नहीं करना चाहिए। यदि आप अपने भाषण को सिद्ध कर रहे हैं, तो एक सरल और स्पष्ट भाषा में आपका संदेश समझाने में आसानी होगी। आपको अपने भाषण के प्रत्येक हिस्से को व्यवस्थित और व्यापक दृष्टि से प्रस्तुत करना चाहिए। हर भाग को तर्क और प्रमाणों के साथ प्रस्तुत करें और उनके साथ जुड़कर एक मूल संदेश या विचार को मध्यस्थ करें। इससे आपको भाषण प्रभावशाली और समर्थन प्राप्त करने लायक बनेगा। यहाँ कुछ मुख्य कसौटियाँ हैं जो सफल भाषण को प्रभावित करते हैं-

- (i) **दर्शकों को समझना:** दर्शकों को समझना, उनके रुचि और स्तर को समझना भाषण का मुख्य कदम है। उनके स्तर पर भाषण देना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन्हें आपके संदेश को समझने और उससे संबंध करने में मदद करता है।

- (ii) **प्रश्नोत्तरी:** कुछ समय प्रश्नोत्तरी के द्वारा दर्शकों से सवाल पूछना और उनका योगदान लेना भाषण को सकारात्मक बनाता है। यह उन्हें भाषण में शामिल होना और काम में लगा हुआ महसूस करवाता है।
- (iii) **विविध उदाहरण:** विविध उदाहरण और कहानियों का उपयोग करना दर्शकों को आपके संदेश को समझाने और याद रखने में मदद करता है।
- (iv) **सकारात्मक शारीरिक भाषा:** सकारात्मक शारीरिक भाषा, जैसे कि आँखों से संपर्क, खड़े रहना और ऊर्जावान भावों का उपयोग करना दर्शकों के साथ एक अनुभव का भाग बनता है। यह उन्हें आपके भाषण में रोचकता बनाए रखने में मदद करता है।
- (v) **सुधार और अभ्यास:** अपनी भाषण शैली को सुधारने और प्रशिक्षण के लिए समय समर्पित करना भी महत्वपूर्ण है। नियमित अभ्यास और फीडबैक प्राप्त करना आपको आगे बढ़ने में मदद करेगा।
- (vi) **समय का पालन:** भाषण का समय निर्धारित करना और उस समय के अंदर अपने संदेश को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करना सफल भाषण के लिए महत्वपूर्ण हैं।

### निष्कर्ष

इन कसौटियों को ध्यान में रखते हुए और निष्क्रिय होते हुए भी, आप एक सफल और प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत कर सकते हैं। अपने भाषण को सही तरह से व्यक्त करें। प्रमाणित और स्टीक तथ्यों का उपयोग करें और व्यक्तिगत विचार या धोखा देने वाले तथ्यों से बचें। इससे आपके भाषण की साख बढ़ेगी और दर्शक आपको अधिक सम्मान देंगे। अंत में, अपने भाषण को समाप्त करते समय, एक प्रबल और प्रेरक संदेश छोड़ें। यह संदेश आपके भाषण के प्रमुख उद्देश्य को फिर से दर्शकों को याद दिलाएगा और प्रेरित करेगा। इससे आपका भाषण यादगार बनेगा और लोगों पर एक सकारात्मक प्रभाव छोड़ेगा। आप अपने भाषण के प्रति संतुलन और संवेदनशीलता बनाए रखें। अपने विचारों को जोर से व्यक्त करें, लेकिन समय के साथ-साथ दर्शकों के प्रति संवेदनशील भी बनें। यदि कोई प्रश्न या प्रतिक्रिया आए, तो उसका सम्वाहक बनें और संवेदनशील जवाब दें। इससे आपका भाषण संवाद का भाग बनेगा और दर्शक आपसे अधिक जुड़ेगे।

### 11. मंच निर्भीकता

मंच पर निर्भीकता के लिए, प्रतिदिन अभ्यास करना चाहिए और अपने विचारों को दूसरों के साथ सांझा करते रहना चाहिए। आरंभ में थोड़ा घबराहट प्राकृतिक है, लेकिन व्यावसायिक रूप से अभ्यास करने से आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और आप मंच पर सफल हो जाएंगे। आप मंच पर आने से पहले और भाषण के दौरान अपने विचारों और भावनाओं को नियंत्रित रखें। सम्भावनाओं और अतिरिक्त दबाव से बचने के लिए यह ध्यान में रखें कि आपका भाषण प्रगतिशील और सम्वाहक हो और अपने विचारों को स्थिर और समर्थन की भावना से ही व्यक्त करें। इससे आपके भाषण में दृढ़ता और प्रभाव महसूस होगा और आप स्वभाविक रूप से अधिक निर्भीक हो जाएंगे। मंच पर निर्भीकता दिखाने के लिए निम्नलिखित युक्तियों को ध्यान में रखें: -

- (i) **आत्मविश्वास:** अपने विचारों और अभिव्यक्ति में विश्वास रखें। जब आपको अपने विचारों पर विश्वास होता है, तो आप मंच पर स्वभाविक तौर पर निडर व्यक्ति बन जाते हैं।
- (ii) **प्रयोग:** मंच पर भाषण देने का नियमित अभ्यास करें। प्रतिदिन थोड़ी सी भाषण प्रस्तुति करें, जिससे आपका आत्मविश्वास और प्रतिभा बढ़ेगी।
- (iii) **समय से पहले तैयारी:** भाषण से पहले अच्छे से तैयारी करें व विचारों को सांझा करें, प्रतिबद्धता के साथ अभ्यास करें और भाषण का प्रयोजन तय करें।
- (iv) **सम्बोधन का तरीका:** दर्शकों को जब सम्बोधित करने का समय आता है, तो आप तब अपनी आवाज़, उच्चारण और शारीरिक भाषा का ध्यान रखें। सकारात्मक, प्रभावशाली और संवेदनशील सम्बोधन करें।
- (v) **संभावनाओं से निपटना:** कभी-कभी असंवेदनशील प्रश्न या प्रतिक्रिया आती है तो ऐसे समय पर संवेदनशील और सहज जवाब दें और सवांहक बनें।
- (vi) **ज्ञान और प्रयोग:** अपने विचारों को प्रमाणित करें और प्रमुख मुद्दे पर अपना ज्ञान बढ़ाएं। जब आप अपने विचारों पर आधारित होंगे, तो आप स्वभाविक रूप से लोगों को अधिक विश्वास दिलाएंगे।
- (vii) **प्रेरणा का स्रोत बनें:** अपने भाषण में प्रेरणा का स्रोत बनें। अपने अनुभवों और ज्ञान को लोगों से सांझा करें जिससे दर्शकों को भी प्रेरित होने का अवसर मिले।
- (viii) **अपने अनुभव को सांझा करें:** अपने विचारों और अनुभवों को दूसरों के साथ सांझा करें जिससे आपका भाषण और व्यक्तित्व सचेत और प्रभावशाली बनेगा।

### निष्कर्ष

ऊपरलिखित युक्तियाँ आपकी मदद करेगी कि मंच पर अधिक निर्भीक और सफल होने में। ध्यान करने का प्रतिदिन अभ्यास और समय पर तैयारी से आप अपने आपको अधिक विश्वास दिलाएंगे और मंच पर आत्मविश्वास से भाषण दें पाएंगे। अपने भाषण में अपने आप को व्यक्त करें। व्यक्तिगत अनुभवों और दृष्टिकोण से भाषण देना दर्शकों को आपके साथ जोड़ता है और उनका आप पर विश्वास बढ़ता है। याद रखें कि हर व्यक्ति को कभी-कभी मंच पर बोलते वक्त थोड़ी घबराहट या डर लग सकता है, लेकिन यह बिल्कुल सामान्य है। विश्वास रखें अपने विचारों में और खुद पर भरोसा रखें। अपने आप को समझाएँ कि हर कोई कुछ न कुछ नया सीखने के लिए यहाँ हैं। यदि आप अपने विचारों को समर्थन, प्रमाण और संवेदनशीलता के साथ व्यक्त करते हैं, तो आप मंच पर सफल हो सकते हैं। आप अपने मंच पर होने वाले भाषण को दिल से अनुभव करें। अपने विचारों और संदेश को व्यक्त करते समय, अपने दिल और दिमाग को एक साथ लाएँ और सचेतता और उत्साह के साथ प्रस्तुत करें। जब आप अपने भाषण में सहज और संवेदनशील होंगे, तब आपका संदेश भी दर्शकों तक आसानी से पहुँचेगा और वे आपको अधिक समर्थन देंगे।

## इकाई-3

12. सार्वजनिक अभिव्यक्ति एवं मूल्यांकन
13. नेतृत्व
14. युवा कार्यकर्ताओं की भाषण कला
15. शिक्षा के महत्त्व पर सार्वजनिक बोलना व शिक्षा का महत्त्व
16. मंच पर सार्वजनिक बोलना के कौशल
17. सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना

### 12. सार्वजनिक अभिव्यक्ति एवं मूल्यांकन

“सार्वजनिक अभिव्यक्ति” का अर्थ होता है “Public Expression” या “Public Discourse” यह व्यक्ति या समाज के विचारों, भावनाओं या दृष्टिकोण का सामान्य रूप से प्रस्तुतीकरण है, जिसे समाज में प्रदर्शित किया जा सकता है, जैसे कि सरकारी सभाओं, रैलियों या मीडिया के माध्यम से। ये सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक मुद्दे पर चर्चा को दर्शाता है।

सार्वजनिक अभिव्यक्ति की कसौटी के विभिन्न आयाम

- (1) **प्रभावशाली सम्बोधन:** सार्वजनिक अभिव्यक्ति का प्रभावशाली आरंभ एक सकारात्मक संबोधन से होता है। सम्बोधन से दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचता है और उन्हें भाषण के प्रमुख विषय पर ध्यान केंद्रित करवाता है। यह संबोधन उद्घाटन का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।
- (2) **विवरण/विश्लेषण और तथ्य:** भाषण के मध्य भाग में मुख्य मुद्दे को समझना, विवरण, विश्लेषण और तथ्य प्रस्तुत करना, समर्थन प्रमाणित करना महत्त्वपूर्ण होता है, ये दर्शकों को ज्ञान और समझ प्रदान करता है और उन्हें आपके विचारों को समझने में मदद करता है।
- (3) **सक्रिय भाग (इंटरैक्टिव अनुभाग):** सार्वजनिक अभिव्यक्ति में दर्शकों के साथ सक्रिय भाग लेना भी महत्त्वपूर्ण है। इसमें दर्शकों से सवाल पूछना, उनके विचारों का सम्मान करना और उनके साथ प्रासांगिक विषय पर चर्चा करना शामिल है।
- (4) **प्रेरक संदेश/प्रेरणादायक संदेश :** अंत में, एक प्रेरक संदेश प्रस्तुत करना सार्वजनिक अभिव्यक्ति को पूर्ण करता है। ये संदेश दर्शकों को प्रेरित करता है और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।
- (5) **संकलन व सफलता की परीक्षा:** सार्वजनिक अभिव्यक्ति के अंत में, अपने भाषण को व्यवस्थित तरीके से समाप्त करके अपनी सफलता का प्रेक्षण करना महत्त्वपूर्ण है। ये आपको मदद करता है कि आपने आप उद्देश्यों को कितना प्रभावित रूप से लोगों तक पहुँचाया है। इससे दर्शकों को आपके भाषण का मूल उद्देश्य याद रहेगा।

- (6) **संवेदनशीलता:** संवेदनशीलता को भाषण में शामिल करना भी महत्वपूर्ण है। अपने विचारों और संदेश को संवेदनशील बनाने के लिए, अप व्यक्तिगत अनुभवों को सांझा कर सकते हैं, कहानियाँ सुना सकते हैं।
- (7) **सम्पर्क:** दर्शकों के साथ सम्पर्क बनाए रखना भी एक अहम् आयाम है। प्रश्नों का समाधान, उनके विचारों का सम्मान और उनकी भूमिका को महत्व देना और उन्हें सक्रिय रूप से शामिल करने का प्रयास करना, ये सब संपर्क बनाए रखने में मदद करता है।
- (8) **सक्रिय शब्दावली:** भाषण को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए सक्रिय शब्दावली का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। नए और प्रभावशाली शब्दों का उपयोग करके, आप अपने भाषण को और भी प्रभावशाली बना सकते हैं।

आप अपने भाषण में विविधता और समृद्धि को शामिल करें। अलग-अलग प्रकार के उदाहरण, कहानियाँ और डेटा का उपयोग करें ताकि आपका भाषण जीवंत और आकर्षक हो। इससे दर्शकों का ध्यान बना रहेगा और उन्हें आपके भाषण के प्रति अधिक रुचि होगी।

अंत में मंच पर होने वाले भाषण की मूल भूमिका को ध्यान में रखें। इसमें आप अपने प्रस्ताव को सहज और स्पष्ट तरीके से व्यक्त करते हुए अपने भाषण को समाप्त करें। अंत में, एक छोटी सी कहानी, प्रशंसा या समर्थन की शब्दावली का इस्तेमाल करें ताकि आपका भाषण यादगार बनें और दर्शकों तक आपका संदेश पहुँच सके।

अपने भाषण को समय पर सीमित समय में समाप्त करें। इससे आप अपने भाषण के मूल उद्देश्य को बरकरार रखते हुए और दर्शकों को भी संतुष्ट रखेंगे।

अपने भाषण को पुनः संक्षिप्त में सुनाए और प्रस्तुतीकरण का निरीक्षण करें। इससे आपको अपनी ध्वनि, व्यक्तित्व और संदेश को सुधारने के अवसर मिलेंगे। कभी-कभी अपने आप को सुनाते हुए, आप कुछ नए और बेहतर विचारों पर पहुँचे जो आपको अपने भाषण को और भी प्रभावशाली बनाने में मदद करेंगे।

इन आयामों को ध्यान में रखते हुए, आप अपनी सार्वजनिक अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली और समर्थन प्राप्त कर सकते हैं।

### सार्वजनिक अभिव्यक्ति एक मूल्यांकन

- (i) **प्रस्तुति की समझदारी:** प्रस्तुति का मूल्यांकन करने से पहले, उसके उद्देश्य और दर्शकों के प्रति प्रभावित होने का ध्यान रखना चाहिए। समझदारी से प्रस्तुति का विश्लेषण करें और उसकी समृद्धि और संकरभिता को मापें।
- (ii) **भाषण का प्रभाव:** भाषण के मध्य भाग को ध्यान से सुनिए और उसके प्रभाव का मूल्यांकन करें। देखें कि कैसे भाषण के द्वारा विचारों को व्यक्त किया गया है और क्या समर्थन दिया गया है।

- (iii) **संबंध निर्माण:** भाषण की प्रस्तुति के दौरान, कैसे संबंध बनाए गए हैं और दर्शकों के साथ कैसे व्यवहार किया गया है, ये भी मूल्यांकन का एक हिस्सा होना चाहिए। देखें, कि भाषण करने वाले ने दर्शकों को कितना समर्थन दिया और उनकी रुचि को कैसे जगाया?
- (iv) **भाषण का तत्त्व:** भाषण में उपयोग के लिए गए तथ्यों, उदाहरणों और कहानियों का मूल्यांकन भी करें। देखें, कि कैसे भाषण के मुख्य विचार को समझाने के लिए विविधता का उपयोग किया गया है।
- (v) **अंतिम प्रतिबद्धता:** भाषण का मूल्यांकन करने के लिए अंत में, देखें कि भाषण का अंत किस तरह से किया गया है। अंतिम प्रतिबद्धता को समझने के लिए, उसके सार को और अंतिम संदेश को ध्यान से सुनना चाहिए।
- (vi) **प्रतिक्रिया प्राप्त करें:** अंत में दर्शकों से फीडबैक प्राप्त करनी चाहिए। उनके विचारों और प्रतिक्रियाओं को सुनिए और उसका मूल्यांकन करें कि कैसे आपका भाषण उनपर असर छोड़ता है।

आप अपने उद्देश्य और प्रस्तुति के समर्थन का भी मूल्यांकन करें। देखें कि क्या आपने अपने उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है और क्या आपके द्वारा दी गई प्रस्तुति उस उद्देश्य को सही तरीके से पूरा करती है। इसके अलावा, प्रस्तुति के प्रभाव का भी मूल्यांकन करें और देखें, कि क्या दर्शकों में भाषण के प्रति रुचि पैदा हुई है और क्या वे आपके विचारों और उद्देश्यों को समझ सकें हैं।

आप अपने भाषण का आडियो या वीडियो रिकार्डिंग बना कर देखें। इससे आप अपने भाषण की गुणवत्ता को सही तरीके से मूल्यांकन कर सकते हैं। देखें, कि कैसे आपने अपने विचारों को व्यक्त किया है, अपनी आवाज और व्यवहार को कैसे संभाला है और क्या आपने अपने दर्शकों को आकृष्ट किया है। इससे आपको अपने भाषण में क्षमताओं और कमियों का पता चलेगा और आप अपने आपको सुधारने का अवसर भी पाएंगे।

### 13. नेतृत्व का अर्थ

नेतृत्व का अर्थ है एक व्यक्ति का समूह का प्रमुख होना जो दूसरों को प्रेरित करता है और उन्हें एक समान लक्ष्य की ओर ले जाता है। नेतृत्व एक महत्वपूर्ण गुण है जो हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।

**परिभाषा:** नेतृत्व को परिभाषित करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने चार आधारों पर परिभाषाओं को चार वर्गों में बाँटा है।

1. पहले वर्ग के मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व को **“व्यक्तिगत विशेषताओं”** के आधार पर परिभाषित किया है। “नेतृत्व का तात्पर्य एक व्यक्ति की इन मौलिक योग्यताओं से हैं जिनके द्वारा वह अन्य लोगों के आन्तरिक व बाह्य व्यवहारों को उत्पन्न करने तथा परिवर्तित करने में सफल हो पाता है।”
2. दूसरे वर्ग के मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व को **“समूह विशेषताओं”** के आधार पर परिभाषित किया है। “नेतृत्व एक ऐसी समूह प्रक्रिया होती है जिसके माध्यम से एक सदस्य को समूह में केन्द्रीय स्थान प्राप्त होता है।”

3. तीसरे वर्ग के मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व को “प्रभावी व्यवहार” के आधार पर परिभाषित किया। “नेतृत्व से अभिप्राय ऐसी प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने व्यवहार से समूह के अन्य व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करता है।”
4. चौथे वर्ग के मनोवैज्ञानिकों ने नेतृत्व को “अन्तः वैयक्तिक प्रभाव” के आधार पर परिभाषित किया है। “नेतृत्व एक ऐसा अन्तः वैयक्तिक प्रभाव होता है जो समूह के एक सदस्य तथा अन्य सदस्यों के बीच पाया जाता है।”

परिभाषा: टनेनबाम (1959) के अनुसार “नेतृत्व एक ऐसी प्रक्रिया है जिस के द्वारा नेता व अनुयायी विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परस्पर प्रभावित होते हैं।”

### नेतृत्व के मुख्य गुण

एक अच्छे नेता में कई गुणों का होना आवश्यक है जो कि निम्नलिखित हैं -

- (i) **सकारात्मक प्रेरणा:** नेतृत्व में सकारात्मक प्रेरणा का महत्त्व होता है। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह दूसरों को सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं, अपने समूह को प्रेरित करते हैं और उन्हें अपने उद्देश्यों की ओर प्रवृत्त करते हैं।
- (ii) **संबंध निर्माण:** नेतृत्व में सहज संबंध बनाने की क्षमता भी महत्त्वपूर्ण है। यह व्यक्ति या समूह को दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाने में मदद करता है और उन्हें अपने विचारों और उद्देश्यों के तरीके से समझाने में मदद करता है। अच्छे नेता में संबंध निर्माण की क्षमता होता है। वे अपने टीम सदस्यों के साथ मजबूत संबंध बनाते हैं और उन्हें एक साथ काम करने के लिए प्रेरित करते हैं।
- (iii) **निष्ठा:** नेतृत्व में निष्ठा और समर्पण का होना महत्त्वपूर्ण है। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह अपने उद्देश्य और मूल्यों के प्रति दूसरों को भी प्रभावित करते हैं।
- (iv) **संकल्प:** नेतृत्व के गुणों में एक और महत्त्वपूर्ण गुण है संकल्प। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह समस्याओं और विपत्तियों के समय भी दृढ़ संकल्प दिखाते हुए और उन्हें पूरा करने के लिए दूसरों को भी प्रेरित करते हैं।
- (v) **सहज व्यवहार:** नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह में सहज व्यवहार होना भी महत्त्वपूर्ण है। उन्हें दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाने में क्षमता होनी चाहिए और उन्हें समझने और सुनने की क्षमता भी होनी चाहिए। वे अपने टीम सदस्यों के संवाहक होते हैं व उन्हें अपनी समस्याओं को व्यवस्थित तरीके से व्यक्त करने का अवसर देते हैं।
- (vi) **योजना:** नेतृत्व में योजना और तैयारी का महत्त्व भी होता है। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित और व्यावसायिक तरीके से योजना बनाते हैं और उन्हें अंजाम तक पहुंचाने के लिए कदम उठाते हैं।

- (vii) **सामर्थ्य:** जो नेतृत्व का अहम् आया है। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह में सामर्थ्य का होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये उन्हें कठिनाइयों का सामना करने और उन्हें पार करने के लिए प्रेरित करता है। सामर्थ्य व्यक्ति को नए और चुनौती भरे खतरों में अग्रसर होने की क्षमता प्रदान करता है और उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने में सहायक होता है। सामर्थ्य के साथ, नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह मुश्किल समय में भी दृढ़ता और सत्यता का परिचय देते हैं, जिससे उनकी उपलब्धियाँ और प्रभावशीलता और भी बढ़िया होती है।
- (viii) **समृद्धि:** समृद्धि नेतृत्व को प्रभावित करती है। समृद्धि का अर्थ है समृद्ध विचारशीलता, समृद्ध दृष्टिकोण और समूह प्रक्रियाओं का होना। नेतृत्व वाले व्यक्ति या समूह में समृद्धि का होना। समृद्धि नए और विचारशील दृष्टिकोण से समस्याओं का समाधान निकालने में मदद करता है। इसके साथ ही, समृद्धि उन्हें एक कार्यक्रम को व्यवस्थित तरीके से अन्जाम तक पहुँचाने में मदद करती है और उनके प्रशासनिक क्षमता को भी दर्शाती है। समृद्ध नेतृत्व से व्यक्ति या समूह अपने उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए सही और प्रभावशाली तरीके से नई दिशा में अग्रसरित होते हैं।
- (ix) **संवेदनशीलता:** एक अच्छे नेता में संवेदनशीलता होती है। वे अपनी टीम के सदस्यों की सुनते हैं। उनकी जरूरतों को समझते हैं और उन्हें समर्थन प्रदान करते हैं।
- (x) **उत्तरदायित्व:** नेता अपने कार्यक्रम में सबसे ज्यादा उत्तरदायी होता है। वे अपने टीम सदस्यों को सही दिशा में अग्रसरित करता है और उन्हें अपने कार्य की जिम्मेदारियों का सम्मान करता है।
- (xi) **समझदारी:** एक अच्छा नेता समझदार होना चाहिए। समझदारी का अर्थ है समझना, समझने की क्षमता और समय पर सही निर्णय लेना। नेता जो समझदार होता है, वे समस्याओं को समझते हैं, उनका सही विचार करते हैं और समय पर सही दिशा में कदम उठाते हैं। समझदार नेता अपने टीम के प्रति सजग रहते हैं और उन्हें सही दिशा में अग्रसरित करते हैं जिससे उनके समूह को सफलता में मदद मिलती है।

### नेतृत्व मूल्यांकन

- (i) **नेतृत्व गुणों का मूल्यांकन:** पहले कदम में, व्यक्ति के नेतृत्व गुणों का मूल्यांकन करना चाहिए कि व्यक्ति में किस तरह की नेतृत्व गुणवत्ता है, जैसे कि सकारात्मक प्रेरणा, सहज व्यवहार और सहज संबंध निर्माण।
- (ii) **कार्यक्रम की व्यवस्था और योजना का मूल्यांकन:** एक व्यक्ति ने कैसे अपने कार्यक्रम या कार्यक्रम को व्यवस्थित तरीके से अंजाम तक पहुंचाया है। उसकी योजना और प्रबंधन की क्षमता का मूल्यांकन करें और देखें, कि कैसे वे अपने उद्देश्यों की ओर प्रगतिशील कदम उठाते हैं।

- (iii) **संबंध निर्माण और समर्थन प्राप्ति:** एक व्यक्ति कैसे अपने समूह के साथ मजबूत संबंध बनाता है और उन्हें सही दिशा में आकर्षित करता है। उसकी समर्थन प्राप्ति का स्तर और उसके साथ संबंध निर्माण का मूल्यांकन करना चाहिए।
- (iv) **सामर्थ और समृद्धि:** एक व्यक्ति में कितनी सामर्थ और समृद्धि है। उसकी प्रतिभाओं को पहचानते हुए, उसकी क्षमताओं का मूल्यांकन करें और देखें कि वह किस तरह से अपने समूह को प्रेरित करता है।
- (v) **उत्तरदायित्व और समझदारी:** एक व्यक्ति किस हद तक उत्तरदायी और समझदार है। उसके कार्य में कितना संकल्प और स्थायित्व है और कैसे वह समस्याओं का समाधान करता है।
- (vi) **सफलता की परीक्षा:** अंत में, यह देखे की व्यक्ति अपने नेतृत्व के दायरे में कितनी सफलता प्राप्त करता है। उनके नेतृत्व के प्रभाव को और उनके कार्यों की परख करें और देखें कि क्या वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं।

इन सभी कदमों से, आप व्यक्ति या समूह के नेतृत्व का मूल्यांकन कर सकते हैं और उनके विकास में मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

#### 14. सार्वजनिक बोलने के युवा कार्यकर्ताओं के लिए भाषणकला

सार्वजनिक बोलना युवा कार्यकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण तथ्य है। यह उनके व्यक्तित्व का एक प्रमुख अंग है जो उनको अपने उद्देश्यों को प्रस्तुत करने और अपनी बात को व्यवस्थित तरीके से व्यक्त करने में मदद करता है। कुछ ऐसे निम्नलिखित तरीके हैं जिनसे युवा कार्यकर्ता अपनी सार्वजनिक बोलने की कला को विकसित कर सकते हैं: -

- (i) **प्रशिक्षण और अभ्यास:** युवा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण और अभ्यास का अवसर प्राप्त होना चाहिए। सार्वजनिक बोलने के कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और अभ्यास से वे अपनी सार्वजनिक भाषण कला को विकसित कर सकते हैं।
- (ii) **विषय की समझ:** भाषण देने से पहले, युवा कार्यकर्ताओं को उनके विषय को गहराई से समझना चाहिए। यह उन्हें अपने विचारों को समृद्ध तरीके से व्यक्त करने में मदद करता है।
- (iii) **सहज व्यवहार:** सहज व्यवहार का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ता को अपने दर्शकों के साथ अच्छे संबंध बनाने और ध्यान खींचने की क्षमता होनी चाहिए।
- (iv) **विविधता का उपयोग:** भाषण को जीवंत और आकर्षक बनाने के लिए, युवा कार्यकर्ताओं को विविधता का उपयोग करना चाहिए। अलग-अलग प्रकार के उदाहरणों, कहानियों और तथ्यों का उपयोग करना चाहिए।
- (v) **सक्रिय शब्दावली:** सक्रिय शब्दावली का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ता को समृद्ध शब्दावली का विकास करना चाहिए ताकि वे अपने विचारों को सही तरीके से व्यक्त कर सकें।

- (vi) **प्रस्तुति की क्रिया:** अभ्यास का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ता को अपने भाषण का बार-बार अभ्यास करना चाहिए ताकि वे अपने भाषण की गुणवत्ता में सुधार कर सकें और अपनी प्रतिभा को प्रगतिशीलता तक पहुँच सकें।
- (vii) **प्रेरणा:** युवा कार्यकर्ताओं को अपने भाषण में दर्शकों को प्रेरित करने और उन्हें अपने उद्देश्य की ओर ले जाने की क्षमता होनी चाहिए। वे अपने विचारों को सही तरीके से व्यक्त करते हुए दर्शकों को प्रेरित कर सकते हैं।
- (viii) **समृद्ध विचारशीलता:** भाषण कला में समृद्ध विचारशीलता का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ताओं में विविध विचारों और नए दृष्टिकोणों को समझाने और व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए।
- (ix) **सकारात्मकता:** भाषण कला में सकारात्मक प्रेरणा का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ताओं को अपने भाषण में सकारात्मकता शब्दों और विचारों का उपयोग करना चाहिए ताकि वे दर्शकों को प्रेरित कर सकें।
- (x) **संकलन और प्रतिभा:** भाषण कला में संकलन और प्रतिभा का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ताओं को अपने भाषण में विविधता और समृद्धि को शामिल करने की क्षमता होनी चाहिए ताकि उनका भाषण जीवंत और आकर्षक हो।
- (xi) **सहज व्यवहार:** सहज व्यवहार का होना भी एक महत्वपूर्ण गुण है। युवा कार्यकर्ताओं को अपने दर्शकों के साथ अच्छे संबंध बनाने चाहिए और उन्हें अपनी ओर खींचने की क्षमता होनी चाहिए।
- (xii) **सामर्थ और योजना:** भाषण कला में सामर्थ और योजना का होना भी महत्वपूर्ण है। युवा कार्यकर्ताओं को अपने भाषण को व्यवस्थित तरीके से अंजाम तक पहुंचाने के लिए सही योजना और प्रबंधन करना आना चाहिए।

### निष्कर्ष

इन सभी गुणों का होना युवा कार्यकर्ताओं के लिए सार्वजनिक भाषा कला में महत्वपूर्ण है, यह उन्हें उनके उद्देश्यों की ओर अग्रसरित करने में मदद करता है।

## 15. शिक्षा के महत्व पर सार्वजनिक बोलना

### कैसे बोलें:

शिक्षा के महत्व के बारे में सार्वजनिक रूप से बोलना मतलब उनकी अहमियत को सबके सामने समझाना। यह किसी प्लैटफार्म पर शिक्षा, जागरूकता अभियान या सार्वजनिक भाषण के जरिए किया जा सकता है। शिक्षा का महत्व समाज में जागरूकता और विकास के लिए जरूरी है। शिक्षा के महत्व को समझाने के लिए आप किसी सार्वजनिक समारोह या सामुदायिक सभा में बोल सकते हैं। अपने संकेतों को स्पष्ट रूप से और जोश से उपस्थित करें और वास्तविक जीवन उदाहरणों या आंकड़ों का इस्तेमाल करके अपनी बात का समर्थन करें।

लोगों को इंटरैक्ट/अंतक्रिया करने का मौका दें। उनके सवालों का जवाब दें और लोगों को शामिल करें। अपनी बात में सकारात्मकता और आशावाद रखें, ताकि लोगों में प्रेरणा और रुचि पैदा हो।

अगर आप किसी स्कूल या कॉलेज में बोल रहे हैं, तो अपने दर्शकों को उनके स्तर पर समझाएं और उन्हें संबंधित करने की कोशिश करें। व्यावहारिक प्रदर्शन, कहानियाँ या मल्टीमीडिया साधनों का इस्तेमाल करके अपने अर्थों को सुदृढ़ करें। अपने भाषण को मनोहर बनाने के लिए हास्य का इस्तेमाल भी कर सकते हैं, लेकिन याद रहे कि आपका संदेश स्पष्ट और प्रभावशाली होना चाहिए और सबसे महत्वपूर्ण, आप में बोलने का आत्मविश्वास होना चाहिए और अपनी बात में विश्वास दिखाएँ। अगर आप सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इस्तेमाल कर रहे हैं, तो अपने संकेतों को संक्षिप्त और आकर्षक बनाएँ। इन्फोग्राफिक, वीडियो और उद्धरण का इस्तेमाल करके अपनी बात को लोगों तक पहुंचाएँ। हैशटैग का इस्तेमाल करके अपने मैसेज को और लोगों तक फैलाएँ और याद रखें, सोशल मीडिया पर अपने दर्शकों के साथ इंटरैक्ट करें और उनके प्रश्नों या फीडबैक का जवाब दें, ताकि उनकी दिलचस्पी बनी रहे। निम्नलिखित तरीकों से शिक्षा के महत्व पर सार्वजनिक बोला जा सकता है:-

- (i) **स्पष्ट संदेश:** अपने बोलने के मकसद को स्पष्ट और संक्षिप्त तौर पर समझाएं।
- (ii) **उदाहरण और आंकड़े:** वास्तविक जीवन उदाहरणों और डाटा का इस्तेमाल करके अपने तर्कों का समर्थन करें।
- (iii) **अन्तक्रियाशीलता:** दर्शकों के साथ इंटरैक्ट करें, उनके सवालों का जवाब दें और शामिल करें।
- (iv) **सापेक्षता:** अपने दर्शकों के स्तर पर समझाएं और इन्हें संबंधित करने की कोशिश करें।
- (v) **व्यवसायिक तकनीक:** व्यावहारिक प्रदर्शन, कहानियाँ और मल्टी मीडिया साधनों का इस्तेमाल करें।
- (vi) **हास्य:** हास्य का प्रयोग करके अपने भाषण को मनोहर बनाएँ। लेकिन संदेश के साथ समझौता न करें।
- (vii) **सोशल मीडिया उपस्थिति:** सोशल मीडिया पर अपने संदेश को देखने में आकर्षक बनाएँ और हैशटैग का इस्तेमाल करके विस्तार बढ़ाएँ।
- (viii) **सोशल मीडिया का इंटरैक्शन:** दर्शकों के सवालों का जवाब दें, उनके साथ इंटरैक्ट करें और फीडबैक को ध्यान में रखें।
- (ix) **आत्मविश्वास:** अपने बोलने में आत्मविश्वास रखें और अपनी बात में विश्वास रखें।
- (x) **सकारात्मकता:** अपनी बात में सकारात्मकता और आशावाद रखें ताकि लोगों में और दिलचस्पी पैदा हो।

## शिक्षा का महत्व

- (1) **परिचय:** शिक्षा के महत्व को सार्वजनिक रूप से समझने का मकसद।

- शिक्षा के बिना समाज में विकास और सम्भावना नहीं है।
- (2) **शिक्षा और समाज:** शिक्षा के बिना समाज में जागरूकता और विकास नहीं हो सकता।
  - शिक्षित समाज बिना अन्याय और अंध विश्वास के बिना होता है।
- (3) **आर्थिक विकास:** शिक्षित नागरिकों से समाज का आर्थिक विकास होता है।
  - शिक्षित श्रम शक्ति का उत्पादन और उन्नति में महत्त्व।
- (4) **व्यक्तियों का सशक्तिकरण:** शिक्षा से लोगों की सोच और व्यवहार में बदलाव आता है।
  - महिलाओं और समाज के कमजोर वर्गों की शक्ति को बढ़ावा।
- (5) **वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता:** विश्व में शिक्षित नागरिकों की उपस्थिति का महत्त्व।
  - शिक्षित युवाओं का देश और समझ के लिए सहायक होना।
- (6) **राष्ट्र निर्माण:** शिक्षित नागरिकों का योगदान राष्ट्र निर्माण में।
  - शिक्षा के माध्यम से देश की एकता और अखंडता का विकास।
- (7) **चुनौतियाँ और समाधान:** शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता।
  - गुणवत्ता की शिक्षा तक पहुँच का विस्तार और सुधार।
- (8) **सरकारी समाज की भूमिका:** सरकार और समाज दोनों का शिक्षा में योगदान।
  - शिक्षा नीतियों के सार्वजनिक सुझाव और समर्थन।
- (9) **निष्कर्ष:** शिक्षा के महत्त्व को समझना, समझाना और उसमें विश्वास दिलाना।
  - शिक्षित समाज का निर्माण, विकास और समृद्धि के लिए महत्त्व।
- (10) **समावेशी शिक्षा:** हर वर्ग के लोगों के लिए शिक्षा की उपलब्धता।
  - विशेष रूप से गरीब और पिछड़े वर्गों को शिक्षा का अधिकार।
- (11) **प्रौद्योगिकी प्रगति:** शिक्षा में तकनीकी प्रगति का महत्त्व।
  - डिजिटल शिक्षा के माध्यम से आधुनिक तरीके से शिक्षा का प्रसार।
- (12) **सांस्कृतिक संरक्षण:** शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति और विरासत का सम्मान।
  - शिक्षित समाज का सामाजिक और सांस्कृतिक विकास
- (13) **स्वास्थ्य और सफाई:** शिक्षा के जरिए स्वास्थ्य और स्वच्छता का प्रचार।
  - शिक्षित समाज का स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास।
- (14) **पर्यावरण जागरूकता:** शिक्षा के जरिए पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण।
  - शिक्षित समाज का प्राकृतिक और मानव सेवा में योगदान।
- (15) **जीवन रेखा सीखना:** शिक्षा का अंत नहीं, जीवन भर की प्रक्रिया होना।
  - नए ज्ञान और प्रतिबद्ध का प्रमुख स्रोत बनना।

ये तर्क आपके भाषण को और भी विस्तृत और विविध बना सकते हैं।

- (16) **परिचय:** अपने दर्शकों को शिक्षा के महत्त्व पर ध्यान केंद्रित करने से पहले, एक प्रभावपूर्ण परिचय दीजिए।
- (17) **आंकड़े और उदाहरण:** शिक्षा के महत्त्व को समझाने के लिए, आंकड़ों और वास्तविक जीवन उदाहरणों का इस्तेमाल करें। जिससे लोगों को इसका असल महत्त्व समझ आए।
- (18) **व्यक्तिगत कहानी:** अगर आपके पास कोई व्यक्तिगत कहानी है जो शिक्षा के महत्त्व को साफ दिखाए, तो उसे सांझा करें। व्यक्तिगत अनुभवों से दर्शकों को जुड़ाव बढ़ता है।
- (19) **चुनौतियाँ स्पष्ट करें:** शिक्षा के लिए अभी भी कितनी जागरूकता की जरूरत है, इस बारे में बात करें, चुनौतियाँ और उसके संबंध के तरीके भी प्रस्तुत करें।
- (20) **समाज पर प्रभाव:** शिक्षा से समाज में किस तरह से बदलाव आता है, इस पर बात करें। समाज में शिक्षित नागरिकों की भूमिका को स्पष्ट करें।
- (21) **भविष्य दृष्टिकोण:** शिक्षा के आगे कैसे विकास हो सकता है और इसका क्या असर होगा, इस पर अपने विचार प्रस्तुत करें।
- (22) **काल टू ऐक्शन:** अपने दर्शकों को शिक्षा के महत्त्व को समझने और उसमें योगदान देने के लिए प्रेरित करें। कुछ कदम उठाने के लिए उन्हें प्रेरित करें।
- (23) **ऐतिहासिक संदर्भ:** शिक्षा का इतिहास और उसके विकास ने कैसे समाज को बदला है।
  - महत्त्वपूर्ण शिक्षा प्रणाली और उनकी विशेषताओं का जिक्र करें।
- (24) **वर्तमान परिदृश्य:** आज के समय में शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करें।
  - शिक्षा प्रणाली में सुधार के ऊपर चर्चा करें।
- (25) **व्यक्तिगत विकास पर भूमिका:** शिक्षा का व्यक्तिगत विकास पर क्या प्रभाव होता है।
  - शिक्षा के माध्यम से स्व-सम्मान और स्वाभिमान का विकास की चर्चा करें।
- (26) **आर्थिक निहितार्थ:** शिक्षित नागरिकों के रूप में आर्थिक विकास का प्रभाव व शिक्षा का व्यक्ति की आर्थिक स्थिति पर क्या असर होता है।
- (27) **शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनें:** शिक्षा के माध्यम से समाज और महिलाओं के कमजोर वर्गों को शक्ति प्राप्त होती है।
  - शिक्षित नागरिकों का समाज में योगदान और उनकी भूमिका पर चर्चा की जा सकती है।
- (28) **सरकारी नीतियाँ और पहल:** सरकार की शिक्षा नीतियाँ और इनके प्रसार में योगदान पर बात की जा सकती है।

- शिक्षा को समाज में उपलब्ध कराने के लिए सरकारी योजनाओं के लाभ के बारे में बताया जा सकता है।
- (29) **अभिभावकों की भागीदारी:** माता-पिता का बच्चों की शिक्षा में योगदान, घर के माहौल को शिक्षा-विषय बनाने में महत्व होता है।
- शिक्षा के प्रति माता-पिता में सक्रिय रूप से कैसे बदलाव लाया जा सकता है।
- (30) **गुणवत्ता की शिक्षा:** शिक्षा में गुणवत्ता का महत्व और गुणवत्ता शिक्षा के लिए क्या उपाय किए जा रहे हैं।
- शिक्षा के हर पक्ष का विकसित होना जैसे कि मानसिक, शारीरिक और सांस्कृतिक विकास।
- (31) **सामाजिक सहभाग:** समुदाय के सभी वर्गों का शिक्षा में योगदान, शिक्षा को एक सामुदायिक मुद्दा बनाने का महत्व।
- शिक्षा के लिए समुदाय में जागरूकता और एकता को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण मुद्दे हैं।
- (32) **व्यक्तिगत विकास और पूर्ति:** शिक्षा के माध्यम से व्यक्तिगत विकास और खुद को समझने का अवसर। अपने सपनों और लक्ष्यों को पाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण होती है।
- (33) **उद्यमिता और नवाचार:** शिक्षित युवाओं में उद्यमिता और नव-निर्माण का विकास। शिक्षा के माध्यम से नए विचार और तात्कालीन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
- (34) **नैतिकता और नैतिक मूल्य:** शिक्षा के माध्यम से नीतियों और नैतिक मूल्यों का प्रचार किया जा सकता है। शिक्षित समाज का सामाजिक और व्यक्तित्व विकास होता है।
- (35) **नियंत्रित सुधार:** शिक्षा में नयी तकनीकी प्रगति और निर्देशों का पालन कैसे करें। शिक्षा प्रणाली में सुधार और विकास की निर्धारित प्रक्रिया क्या हो इस मुद्दे पर बोला जा सकता है।
- (36) **स्वतंत्रता का सामर्थ:** शिक्षा सार्वजनिक बोलने में स्वतंत्रता और सामर्थ का विकास भी प्रदान करता है। शिक्षित व्यक्ति को अपने विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने की क्षमता होती है और वे अपने सामाजिक दृष्टि से सही तरीके से भाषण कर सकते हैं। इसके अलावा, शिक्षा उन्हें तर्किक विचारों को समझने की ओर दूसरों के तर्किक विचारों का सम्मान करने की क्षमता प्रदान करती है, जोकि एक समृद्ध समाज में आवश्यक है।
- (37) **ज्ञान प्रदान:** शिक्षा प्राप्ति से व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त होता है, जो उन्हें विभिन्न विषयों में समर्थ बनाता है। इस ज्ञान की सत्यता से, व्यक्ति अपने विचारों को सही तरीके से व्यक्त कर सकता है और समाज में एक प्रभावशाली भाषण रच सकता है।

- (38) **विचार प्रतिबद्धता:** शिक्षा व्यक्ति को विचार प्रतिबद्ध बनाती है, जिससे वे सामाजिक मुद्दे और समस्याओं पर गहराई से सोच सकते हैं। यह उन्हें सार्वजनिक बोलने में समर्थ बनाती है, क्योंकि वे अपने विचारों को सही तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।
- (39) **व्यावहारिक क्षमता:** शिक्षा व्यक्ति को व्यावहारिक क्षमता भी प्रदान करती है। वे सही तरीके से भाषण की योजना और प्रबंधन कर सकते हैं, सही तरीके से शब्दों का उपयोग कर सकते हैं और अपने दर्शकों के साथ सहज व्यवहार कर सकते हैं।
- (40) **सामर्थ और विश्वास:** शिक्षा प्राप्ति से व्यक्ति की सामर्थ और विश्वास दोनों बढ़ता है। ये उन्हें अपने उद्देश्यों को प्रस्तुत करने में अपने विचारों को दूसरों के सामने व्यक्त करने में सहायक होती है।
- (41) **सांस्कृतिक समाज में योगदान:** शिक्षित व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक समाज में भाषण करके अपना योगदान देते हैं। उनका ज्ञान और विचारधारा समाज को प्रगतिशील बनाने में मदद करती है।
- (42) **नए विचारों का प्रचार:** शिक्षित व्यक्ति नए विचारों और सामाजिक सुधारशील मुद्दों का प्रचार करके समाज में परिवर्तन ला सकते हैं। उनका भाषण उन्हें दूसरों के साथ जोड़ने और समाज में जागरूकता पैदा करने में मदद करता है।

### निष्कर्ष

एक शक्तिशाली और प्रेरक निष्कर्ष दीजिए, जिससे दर्शकों को शिक्षा के महत्व का सच समझ आए और उनमें किसी तरह का बदलाव की इच्छा पैदा हो। शिक्षा सार्वजनिक बोलने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि वे व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रगतिशील बनाता है और उन्हें उनके विचारों को सही तरीके से व्यक्त करने में मदद करता है।

### 16. मंच पर सार्वजनिक बोलने के कौशल ग्रहण

मंच पर सार्वजनिक बोलने के कौशल होने के लिए दृढ़ संकल्प और आत्मप्रशंसा का होना जरूरी है। अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने और अपने विचारों को प्रस्तुत करने में विश्वास और दृढ़ता का होना जरूरी है। इसके अलावा अपनी प्रतिभा की प्रशंसा और सम्मान देना महत्वपूर्ण है। आपको अपने आप को समझने और अपने विचारों का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है ताकि आप अपने भाषण को और भी बेहतर बनाने में सक्षम हो सकें। मंच पर सार्वजनिक बोलने के लिए समझदारी और सजगता का होना जरूरी है। आपको अपने दर्शकों को समझना, उनके दृष्टिकोण को समझना और उनके सवालों और प्रतिक्रियाओं का समाधान करने की क्षमता होनी चाहिए। इसके अलावा समझदारी से आप अपने भाषण को दर्शकों के अनुकूल और प्रभावशाली बनाने में मदद प्राप्त कर सकते हैं। मंच पर बोलते वक्त, व्यक्तिगत संबंध बनाना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शकों के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाता है। इसके लिए, आपको अपने भाषण को सुनने वाले लोगों के साथ एक व्यक्तिगत संबंध स्थापित करना चाहिए, जिससे उन्हें आपके विचारों और भाषण में अधिक रुचि हो और वे

आपको सुनने में और भी व्यावहारिक रूप से शामिल हो सकें। मंच पर सार्वजनिक बोलने का कौशल ग्रहण करने के लिए कुछ मुख्य तथ्य हैं -

- (i) **अभ्यास:** सार्वजनिक बोलने का कौशल ग्रहण करने के लिए अभ्यास महत्वपूर्ण है। प्रस्तुति को पहले से ही कई बार अभ्यास करें ताकि आप अपने विचारों को व्यवस्थित तरीके से व्यक्त कर सकें और अपनी प्रतिभा को प्रगतिशील तरीके से प्रस्तुत कर सकें।
- (ii) **सकारात्मक प्रेरणा:** मंच पर सार्वजनिक बोलने के लिए सकारात्मक प्रेरणा होना जरूरी है। अपने उद्देश्यों और विचारों के प्रति प्रगतिशील और सकारात्मक दृष्टि होनी चाहिए जो दर्शकों को प्रभावित करे।
- (iii) **संबंध निर्माण:** दर्शकों के साथ अच्छे संबंध बनाए और उनके साथ संवाद में शामिल हो। उनका समर्थन प्राप्त करें और उनके साथ इंटरैक्ट करें ताकि वे आपके भाषण को अधिक सहज और व्यावसायिक तरीके से सुन सकें।
- (iv) **विशेष शब्दों का इस्तेमाल:** मंच पर बोलते समय, विशेष शब्दों का उपयोग करें जो आपके विचारों को स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करें। संभव हो तो सही से साहित्य का उपयोग करें।
- (v) **सामर्थ और समृद्धि:** भाषण को व्यवस्थित तरीके से अंजाम तक पहुँचाने के लिए सामर्थ और समृद्धि का होना भी महत्वपूर्ण है। अपने विचारों की सही तरीके से तैयारी करें और अपने भाषण को सफलता से समाप्त करें।
- (vi) **सहज व्यवहार:** सहज व्यवहार का होना भी एक महत्वपूर्ण गुण है। मंच पर बोलते समय सहज और व्यावहारिक तरीके से भाषण करें और अपने दर्शकों के साथ अच्छे संबंध बनाए।

### निष्कर्ष

इन तथ्यों का ध्यान रखते हुए, आप सार्वजनिक बोलने के कौशल ग्रहण कर सकते हैं और अपनी प्रतिभा को मंच पर सफलता से प्रस्तुत कर सकते हैं। मंच पर बोलते समय, आपका भाषण का प्रकार और स्पष्ट होना चाहिए, ताकि दर्शक आपके विचारों को समझने और उनसे प्रभावित हो सकें। इसके लिए, आपको सही तरीके से शब्दों का चयन करना और उन्हें स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करना होगा। अगर संभव हो तो उदाहरण और कहानियों का उपयोग भाषण में करें ताकि आपके विचार दर्शकों तक आसानी से पहुँच सकें।

### 17. सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना

सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना का होना एक महत्वपूर्ण तथ्य है। नेतृत्व की भावना व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रगतिशील बनाती है और उसे अपने विचारों को सही तरीके से व्यक्त करने में सहायक होती है। नेतृत्व की भावना व्यक्ति को दूसरों के साथ मिलकर काम करने की क्षमता प्रदान करती है। सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना अन्य व्यक्तियों का सहयोग और समर्थन प्रदान करने में मदद करती है

। नेता अपने भाषण के माध्यम से लोगों को एक साथ लाकर सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक मुद्दे पर एक मत पर लाना सिखाते हैं। इसके अलावा, वे अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाने और उन्हें प्रेरित करने का जरिया बनते हैं। नेतृत्व की भावना के साथ, व्यक्ति अपने समाज में एक नेता की भूमिका अदा करता है और समाज में सुधार को प्रोत्साहित करता है।

निम्नलिखित कुछ मुख्य तथ्यों के द्वारा सार्वजनिक बोलने के लाभ इस प्रकार हैं-

- (1) **प्रेरणा प्रदायक:** सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना व्यक्तियों को प्रेरित करती है कि वे अपने विचारों और उद्देश्यों को सही तरीके से अन्य लोगों को प्रस्तुत करें। वे अपने भाषण के माध्यम से दर्शकों को प्रेरित करते हैं और उन्हें अपने उद्देश्यों की ओर आकर्षित करते हैं।
- (2) **संकल्प व साहस और स्थायित्व:** नेतृत्व की भावना व्यक्ति को साहस, संकल्प और स्थायित्व प्रदान करती है। वे अपने विचारों और मूल्यों के लिए स्थिर रहते हैं और मुश्किल समय में भी दृढ़ रहते हैं। वे अपने भाषण में स्थायित्व का प्रदर्शन करते हैं, जो दर्शकों को प्रभावित करता है।
- (3) **संबंध निर्माण:** नेतृत्व की भावना व्यक्ति को संबंध निर्माण में मदद करती है। वे अपने दर्शकों के साथ अच्छे संबंध बनाते हैं और उन्हें अपनी ओर खींचने की क्षमता रखते हैं। वे समाज में आदर्श भूमिका निभाते हैं और अपने समूह को सही दिशा में आकर्षित करते हैं।
- (4) **सामर्थ और समृद्धि:** नेतृत्व की भावना व्यक्ति में सामर्थ और समृद्धि का विकास करती है। वे अपने भाषण में अपनी प्रतिभा और क्षमता को व्यक्त करते हैं और अपने विचारों को सफलता के लिए कार्यक्रम बनाते हैं।
- (5) **उद्देश्यों की ओर ले जाना:** नेतृत्व की भावना व्यक्ति को अपने उद्देश्यों की ओर ले जाती है। वे अपने भाषण में सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्दे को उठाते हैं और उन पर व्यवस्थित रूप से विचार करते हैं जो समाज में परिवर्तन ला सकते हैं।

### निष्कर्ष

सार्वजनिक बोलने में नेतृत्व की भावना का होना व्यक्ति को सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से समर्थ एवं प्रगतिशील बनाता है। सार्वजनिक बोलने से व्यक्ति की समझाने और सम्बोधित करने की क्षमता बढ़ती है। वे अपने भाषण में सही तरीके से शब्दों का उपयोग करते हैं, समर्थन देते हैं और अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करते हैं। इस तरह से, वे अपने दर्शकों के साथ गहरा संबंध बनाते हैं और उन्हें अपने उद्देश्यों की ओर अग्रसित करने में मदद करते हैं।

## इकाई-4

18. हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता
19. सार्वजनिक बोलने की कला
20. नेतृत्व परिपेक्ष्य व बच्चों में नेतृत्व विकास
21. व्यक्तित्व विकास व नेतृत्व
22. शिक्षा में नेतृत्व

### 18. हिंदी भाषा की प्रासंगिकता

हिंदी भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है, खासकर भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर। हिंदी भाषा का महत्व आज के समय में भी बढ़ रहा है। भूमंडलीकरण के दौर में भी, हिंदी भाषा का महत्व और उपयोग अधिक हो रहा है। इंटरनेट और सामाजिक मीडिया के माध्यम से भी हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार हो रहा है, जिससे युवा पीढ़ी को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति अधिक जागरूकता हो रही है। इसके अलावा, हिंदी भाषा की उपस्थिति का महत्व भारत के अलावा विदेशों में बढ़ रहा है, जहाँ भारतीय भी अपनी मातृभाषा का सम्मान और उपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार हिंदी भाषा का महत्व आज के समय में विशेष रूप से अधिक बढ़ गया है और यह एक सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। हिन्दी भाषा की प्रासंगिकता कुछ निम्नलिखित मुख्य तत्वों में प्रकट होती है: -

- (i) **राष्ट्र भाषा:** हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है और इसका महत्व देश के एकीकरण और भारतीय संस्कृति और इतिहास को समझने में है। यह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाओं वाले लोगों को एक साथ आने में मदद करती है।
- (ii) **संस्कृति और विरासत:** हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति और विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हिंदी में लिखी गई कविताएँ, कहानियाँ और ग्रंथ हमारी अमीर विरासत है। जो देश की समृद्धि व संस्कृति का प्रतीक है।
- (iii) **व्यापार और सरकारी कार्यवाही:** हिंदी भाषा को व्यापार और सरकारी कार्यवाही में भी महत्व दिया जाता है। सरकारी दस्तावेज, अधिकारों और सूचनाओं को हिंदी में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे देश के हर नागरिक को समझने और समझाने में आसानी होती है।
- (iv) **मीडिया और संचार:** हिंदी भाषा मीडिया और संचार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी के प्रमुख अखबार, पत्रिकाएँ और न्यूज चैनल लाखों लोगों तक समाचार पहुँचाते हैं और उनको बेहतर तरीके से समझाने में मदद करते हैं।

- (v) **सार्वजनिक भाषा:** हिंदी भाषा भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और इसकी वजह से यह एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक भाषा भी है। इससे देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग आपस में बिना किसी भाषिक भेदभाव के संचार कर सकते हैं।
- (vi) **राजनीति और सरकार:** हिंदी भाषा का महत्व भारत की राजनीति और सरकार में भी है। राजनेता और सरकारी अधिकारी हिंदी में भाषण देते हैं और हिंदी भाषा में प्रस्तुतियों का आयोजन होता है, जो देश के प्रति समर्पितता का प्रतीक है।
- (vii) **राष्ट्रीय एकता:** हिंदी भाषा को भारत की राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है जो देश की एकता और एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- (viii) **युवा पीढ़ी की भावना:** आज की युवा पीढ़ी में हिंदी भाषा की प्रासांगिकता काफी अधिक है। सामाजिक मीडिया और डिजीटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से हिंदी भाषा का उपयोग और प्रचार अधिक होता है, जिससे युवा पीढ़ी अपनी भाषा और संस्कृति को अधिक समझती और अपनाती है।
- (ix) **वैश्विक परिदृश्य:** भूमंडलीकरण के दौर में भी, हिंदी भाषा का महत्व बढ़ जाता है। प्रचार के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार विदेशों में भी हो रहा है, जिसमें भारतीय संस्कृति और भाषा का विदेशों में भी प्रदर्शन होता है।

### निष्कर्ष

हिंदी भाषा का महत्व भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन में अद्भुत है और यह देश की एकता और अखंडता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी भाषा की प्रासांगिकता आज के समय में अधिक बढ़ रही है।

## 19. सार्वजनिक बोलने की कला

सार्वजनिक बोलने की कला एक महत्वपूर्ण कला है, जो व्यक्ति को अपने विचारों, अभिप्रायों और भावनाओं को समझने और दूसरों के साथ व्यवहार करने में मदद करती है। सार्वजनिक बोलने की कला व्यक्ति की समझ को सही दिशा और निर्देशन प्रदान करती है। प्रभावशाली भाषण और प्रस्तुति के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों और मूल्यों को समझ के साथ दूसरों के समक्ष रख सकता है और उनकी समझ में परिवर्तन लाने की दिशा में उन्हें प्रेरित कर सकता है। इसके अलावा, सार्वजनिक बोलने की कला व्यक्ति को अपनी भूमिका में सामर्थ्य बनाती है, जिससे वे अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों का समर्थन कर सकें और समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। सार्वजनिक बोलने की कला का महत्व निम्नलिखित तथ्यों में झलकता है: -

- (i) **व्यक्तित्व विकास:** सार्वजनिक बोलने की कला व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे व्यक्ति को अपने विचारों को व्यवस्थित तरीके से व्यक्त करने और अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त करता है।

- (ii) **संबंध निर्माण:** सार्वजनिक बोलने की कला व्यक्ति को संबंध निर्माण में सहायक होती है। सहज व्यवहार और प्रभावशाली संचार के माध्यम से व्यक्ति अपने दर्शकों के साथ गहरा संबंध बना सकता है।
- (iii) **समाज सुधार:** सार्वजनिक बोलने की कला सामाजिक सुधार और परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रभावशाली भाषण के माध्यम से व्यक्ति अपने सामाजिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करके समाज में सुधार को प्रोत्साहित कर सकता है।
- (iv) **प्रेरकता:** सार्वजनिक बोलने की कला लोगों को प्रेरणा देती है। अच्छे भाषण और प्रस्तुति से लोगों में उत्साह और प्रेरणा का विकास होता है, जो उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसरित करता है।
- (v) **व्यावसायिक क्षमता:** सार्वजनिक बोलने की कला व्यावसायिक क्षमता में भी सहायक होती है। प्रभावशाली संचार के माध्यम से व्यक्ति अपने व्यावसायिक उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करता है।
- (vi) **सांस्कृतिक समृद्धि:** सार्वजनिक बोलने की कला देश की सांस्कृतिक समृद्धि और विरासत को भी बढ़ावा देती है। प्रस्तुतियों, कथाकथनों और कवि सम्मेलनों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का आनंद उठाया जा सकता है।

### निष्कर्ष

इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि सार्वजनिक बोलने की कला एक व्यक्ति को सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक दृष्टि से प्रगतिशील बनाती है और उसे एक समर्थ और प्रगतिशील समाज का हिस्सा बनाती है।

### 20. नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य

नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य यह होता है कि एक व्यक्ति या समूह दूसरों को प्रेरित करता है, उन्हें सहायता प्रदान करता है और उन्हें एक दिशा में अग्रसरित करता है।

- (i) **नेता की भूमिका:** नेतृत्व एक नेता की भूमिका अदा करता है, जो समाज में एक समृद्धि, प्रगतिशील और समर्थ समाज की दिशा में लोगों को लेकर चलता है।
- (ii) **सहायता और समर्थन:** नेतृत्व व्यक्ति या समूह को सहायता और समर्थन प्रदान करता है। नेता अपने अनुयायियों को उनके उद्देश्यों की ओर अग्रसरित करता है और उन्हें अपने लक्ष्यों तक पहुँचाने में मदद करता है।
- (iii) **संकल्प और स्थायित्व:** नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य संकल्प और स्थायित्व पर आधारित होता है। एक नेता या लीडर अपने उद्देश्यों के प्रति दृढ़ और स्थिर रहता है और समय-पर संकल्प को सही दिशा में लेकर चलता है।
- (iv) **उद्देश्यों की ओर ले जाना:** नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य उद्देश्यों की ओर ले जाना होता है। एक नेता अपने सामाजिक, राजनीतिक या व्यावसायिक उद्देश्यों की ओर लोगों को अग्रसरित करता है और उन्हें अपनी दिशा में लेकर चलता है।

- (v) **सामर्थ और समृद्धि:** नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य सामर्थ और समृद्धि पर होता है। एक लीडर अपने सामर्थ और समृद्धि का समावेश करके लक्ष्यों की ओर लेकर चलता है और उन्हें सफलता की दिशा में अग्रसरित करता है।
- (vi) **सामाजिक परिवर्तन:** नेतृत्व के परिप्रेक्ष्य सामाजिक परिवर्तन और विकास पर केंद्रित होता है। एक नेता या लीडर समाज या समूह और समृद्ध समाज की दिशा में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है और समाज के हर व्यक्ति को समृद्ध बनाने में मदद करता है।

### निष्कर्ष

इस प्रकार नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यवसायिक विकास पर आधारित होता है और एक नेता अपने समाज को उद्देश्यों की ओर अग्रसरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक नेता अपने अनुयायियों को उनकी क्षमता और समृद्धि का विकास करने में सहायता प्रदान करता है। वे उन्हें प्रेरित करते हैं अपनी क्षमताओं का इस्तेमाल करके अपने उद्देश्यों तक पहुँचाने के लिए और उन्हें समृद्ध और प्रगतिशील बनाने के लिए मार्गदर्शन देते हैं। इस तरह से नेतृत्व का परिप्रेक्ष्य सामाजिक और व्यक्तिगत विकास पर टिका होता है, जिससे एक समृद्ध और प्रगतिशील समाज का निर्माण होता है।

### बच्चों में नेतृत्व विकास

बच्चों के लिए नेतृत्व का विकास एक महत्वपूर्ण तथ्य है क्योंकि यह उन्हें सामाजिक, व्यक्तिगत और व्यवसायिक स्तर पर सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक गुणों और क्षमताओं का विकास करता है। नेतृत्व बच्चों में स्वयं की विशेषताओं का विकास करता है। हर बच्चा अलग होता है और उनकी अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। नेतृत्व का विकास बच्चों को उनकी विशेषताओं को पहचानने और उन्हें सही दिशा में अग्रसरित करने में मदद करता है। इसके अलावा यह उन्हें अपनी शक्तियों को पहचानने और उसका इस्तेमाल करके अपने उद्देश्यों तक पहुँचने की क्षमता प्रदान करता है। नेतृत्व बच्चों में स्वाभिमान और आत्म-विश्वास का विकास करता है। जब बच्चा एक समस्या का समाधान निकालता है या किसी मुश्किल पर जीत प्राप्त करता है तो उसमें एक अलग ही स्तर का स्वाभिमान और आत्म-विश्वास की वृद्धि होती है। बच्चों में नेतृत्व विकास से कुछ मुख्य गुणों का विकास इस प्रकार है-

- (i) **सामाजिक शिक्षण:** नेतृत्व बच्चों को सामाजिक शिक्षण प्रदान करता है। जब बच्चों को सहयोग, समर्पण और सहभागिता का महत्व समझाया जाता है, जो उन्हें समाज में सामाजिक और जिम्मेदार नागरिक बनाता है।
- (ii) **सहयोग और टीमवर्क:** नेतृत्व बच्चों को सहयोग और टीम वर्क का महत्व समझाता है। बच्चों को साथ मिलकर कार्य करने और एक दूसरे का समर्थन करने की क्षमता प्राप्त होती है, जो उनके व्यक्तिगत और व्यवसायिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

- (iii) **नैतिक मूल्यों का विकास:** नेतृत्व बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करता है। बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारियों, संवेदनशीलता और सम्मान के प्रति जागरूक बनाता है, जो इन्हें एक अच्छे नागरिक बनने में मदद करता है।
- (iv) **विचारों का विकास:** नेतृत्व बच्चों में विचारों का विकास करता है, बच्चों को अपने विचारों को व्यक्त करने की क्षमता प्राप्त होती है और उन्हें अपनी राय देने का साहस प्राप्त होता है, जो उनके व्यक्तित्व और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- (v) **प्रेरक बनने की क्षमता:** नेतृत्व बच्चों में प्रेरक बनने की क्षमता का विकास करता है। इससे बच्चों में अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए प्रगतिशील सोच और कार्यकुशलता का विकास होता है, जो इन्हें अपने सपनों को पूरा करने में मदद करता है।

### निष्कर्ष

बच्चों के लिए नेतृत्व का विकास उन्हें एक सामर्थ और सामाजिक रूप से समाज में योगदान देने के लिए तैयार करता है। नेतृत्व की क्षमता बच्चों को एक प्रबल सुरक्षित भविष्य की ओर अग्रसरित करती है। नेतृत्व बच्चों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का अहसास दिलाता है। जब बच्चा समाज में एक नेतृत्व की भूमिका अदा करता है, तो उसके अंदर एक सामाजिक जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न होता है। वह समाज में एक सहायक और प्रभावी नागरिक बनने की दिशा में अग्रसरित होता है। नेतृत्व बच्चों में एक सहयोगी और समर्थन व्यवहार का विकास करता है। बच्चों को नेतृत्व के रूप में स्थापित होने से, वे अपने साथियों और मित्रों के लिए एक प्रेरक, सहायक और समर्थक बन जाते हैं, जिससे उनका पारस्परिक रिश्ता मजबूत होता है और वे एक दूसरे का साथ देते हैं, जिससे उनका सामाजिक और व्यक्तिगत विकास होता है। नेतृत्व का विकास बच्चों में नैतिक मूल्यों और दया भावना का विकास भी करता है। जब बच्चा नेतृत्व की भूमिका अदा करता है, तो उसे अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का अहसास होता है और वे अपने कार्यों में नैतिकता और सहानुभूति लाते हैं। जब बच्चा नेतृत्व के रूप में आगे बढ़ता है तो इससे सामाजिक समस्याओं का समाधान निकालने और प्रगतिशील विचारों की क्षमता प्रदान होती है। इससे उनका मनोबल और सृजनात्मक विकास होता है, जो उन्हें एक अच्छे नागरिक बनने की ओर प्रगतिशील समाज की दिशा में अग्रसरित करता है। इस प्रकार नेतृत्व बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण साधन है।

## 21. व्यक्तित्व विकास नेतृत्व

नेतृत्व के माध्यम से व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है क्योंकि नेता को अपनी स्थिति व प्रेरणा के आधार पर अपने कर्तव्यों का संचालन करना पड़ता है। यह उन्हें सहनशीलता, सहयोग, समस्या समाधान आदि गुणों का विकास करने में मदद करता है, जो उन्हें अधिक प्रभावशाली व सक्षम बनाते हैं। नेतृत्व व्यक्ति में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता, दूसरों के साथ संवाद करने की क्षमता में भी सुधार करता है। नेतृत्व से

व्यक्ति को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दृढ़ता व संघर्ष की क्षमता मिलती है। वह अपने समूह में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता विकसित करता है। नेतृत्व से अनुभव व प्रायोगिक ज्ञान की प्राप्ति व्यक्ति को अधिक समर्थ व संवेदनशील बनाती हैं। नेतृत्व के माध्यम से अपने विचारों और विश्वासों को प्रकट करने का साहस प्राप्त होता है। नेता अपने अनुयायियों को प्रेरित करता है। व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व दो अहम पहलू हैं जो व्यक्ति को निर्धारित करते हैं और उन्हें जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कराने में सहायक होते हैं।

व्यक्तित्व विकास में व्यक्ति का पूर्ण विकास शामिल है, जैसे उनकी सोच, व्यवहार, मूल्य और क्षमताओं का विकास। इसमें आत्मविश्वास, समझदारी, सहजता और आंतरिक गुणों का विकास शामिल है। जब हम अपने व्यक्तित्व विकास को विकसित करते हैं, तब हम अपने जीवन में और समाज में अधिक प्रगतिशील बनते हैं।

नेतृत्व एक अहम् गुण है जो हमें अपने जीवन में और समाज में आगे बढ़ने में सहायता करता है। एक नेता होने का अर्थ है दूसरों को प्रेरित करना, उन्हें सहायता प्रदान करना और उन्हें सामूहिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए एक दिशा में लेकर चलना। नेतृत्व में समर्पण, समझदारी और सहयोग का महत्त्व होता है।

व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व विकास दोनों का एक दूसरे से गहरा संबंध होता है। जब हम अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हैं, तब हम अपने आस-पास के लोगों को प्रभावित करते हैं। एक समर्थ और विकसित व्यक्ति अपने कार्यों और विचारों से दूसरों को प्रेरित करता है।

व्यक्तित्व विकास के माध्यम से व्यक्ति अपने सभी आंतरिक व बाह्य गुणों को समझता है और उन्हें विकसित करता है जबकि नेतृत्व उसे अपने गुणों का सही इस्तेमाल करके दूसरों का सहायक बनाता है। इस प्रकार व्यक्तित्व विकास व्यक्ति के आत्म विश्वास को बढ़ाता है और नेतृत्व उसे अपने उद्देश्यों तक पहुँचाने में मदद करता है। व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व दोनों ही एक व्यक्ति को एक सशक्त, समझदार और प्रगतिशील नागरिक बनाते हैं। इन दोनों पहलुओं को समझकर उन पर ध्यान देते हुए, व्यक्ति अपने जीवन व समाज में प्रकाश भर सकता है और समृद्ध जीवन व्यतीत कर सकता है।

इस प्रकार व्यक्तित्व विकास और नेतृत्व दूसरों को पूर्ण करने में मदद करते हैं और व्यक्ति को जीवन में सफलता और सम्मान प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

## 22. शिक्षा में नेतृत्व विकास

शिक्षा में नेतृत्व का विकास एक महत्त्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि यह बच्चों को सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर प्रगतिशील बनाता है। शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को उनके स्वभाव और रुचि के अनुसार होता है। हर बच्चा अलग होता है और उसका नेतृत्व भी अलग-अलग होता है। शिक्षा के माध्यम से, बच्चों को उनके स्वभाव और रुचि के अनुसार नेतृत्व का विकास करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी स्वभाविक प्रतिभा और क्षमताओं का विकास होता है। शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को सामाजिक समृद्धि और सामाजिक न्याय के

प्रति जागरूक बनाता है। नेतृत्व से बच्चों में सामाजिक समस्याओं का समाधान निकालने और सामाजिक परिवर्तन लाने का प्रयास करने की क्षमता प्राप्त होती है, जिससे वे एक सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं। शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को अनुकूल और प्रगतिशील शिक्षण प्रदान करता है। इससे बच्चों में एक सृजनात्मक सोच और नए व अभिनव विचारों का विकास होता है, जो इन्हें एक सफल भविष्य की ओर अग्रसरित करता है।

शिक्षा से बच्चों में निम्न गुणों का विकास होता है -

- (i) **संकल्प और स्थायित्व:** शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को संकल्प और स्थायित्व का महत्व समझाता है। जब एक बच्चा लीडर बनता है, तो उसे अपने उद्देश्यों के प्रति दृढ़ और स्थिर होना सिखाया जाता है, जो उन्हें सामाजिक और व्यवसायिक स्तर पर सफलता प्राप्त करने में मदद करता है।
- (ii) **सामर्थ का विकास:** शिक्षा के माध्यम से नेतृत्व के विकास से बच्चों में क्षमताओं का विकास होता है। बच्चों को सहयोग और समर्पण का महत्व समझाया जाता है, जो उन्हें एक अच्छे लीडर बनने में मदद करता है।
- (iii) **सहयोग और टीमवर्क:** शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को सहयोग और टीमवर्क का महत्व समझाता है। बच्चों को साथ मिलकर कार्य करने और एक दूसरे का समर्थन करने की क्षमता प्राप्त होती है, जो उनके व्यक्तित्व और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
- (iv) **नैतिक मूल्यों का विकास:** शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करता है। बच्चों को सामाजिक जिम्मेदारियों, संवेदनशीलता और समाज के प्रति जागरूक बनाता है, जो उन्हें एक अच्छे नागरिक बनने में मदद करता है।
- (v) **विचारों का विकास:** शिक्षा से नेतृत्व का विकास होने से बच्चों को अपने विचारों का विकास करने की क्षमता प्राप्त होती है और उन्हें अपनी राय देने का साहस प्राप्त होता है, जो उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

### निष्कर्ष

शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों को सामर्थ, प्रगतिशील और सामाजिक बनाता है, जो उन्हें समाज में योगदान देने और सफलता प्राप्त करने के लिए तैयार करता है। शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों में एक समर्थ व सशक्त सोच का विकास करता है। जब बच्चा एक लीडर बनता है, तो उसे समस्याओं का समाधान निकालने और नए अवसर देखने की क्षमता प्राप्त होती है। इससे उनके मनोबल और सृजनात्मक विचार प्रकट होते हैं, जो उन्हें एक प्रगतिशील जीवन व्यतीत करने की ओर अग्रसरित करते हैं। शिक्षा में नेतृत्व का विकास बच्चों में एक विचारशील और व्यवसायिक दृष्टि का विकास करता है। बच्चों को समस्याओं का सामना करने और उनका

समाधान निकालने के लिए तैयार करता है। इससे इनका व्यक्तिगत और व्यवसायिक विकास प्रबल होता है वे एक सफल जीवन व्यतीत करने में सक्षम बनते जाते हैं। शिक्षा में नेतृत्व के विकास से बच्चों में एक सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास और सामाजिक सहयोग की भावना भी विकसित होती है। जब बच्चा एक लीडर बनता है, तो उसे सामाजिक समस्याओं का समाधान निकालने और समाज की भलाई के लिए योगदान देने का जोश होता है। इससे उसका व्यक्तिगत और सामाजिक विकास एक साथ होता है। शिक्षा से नेतृत्व का विकास बच्चों में एक सहयोगी और समर्थन व्यवहार का विकास भी होता है। जिससे उनका पारस्परिक रिश्ता मजबूत होता है।